करुणा की कथाएं

भाग-1

आइये ! विश्व शांति के लिये हाथ बढ़ाएं ...

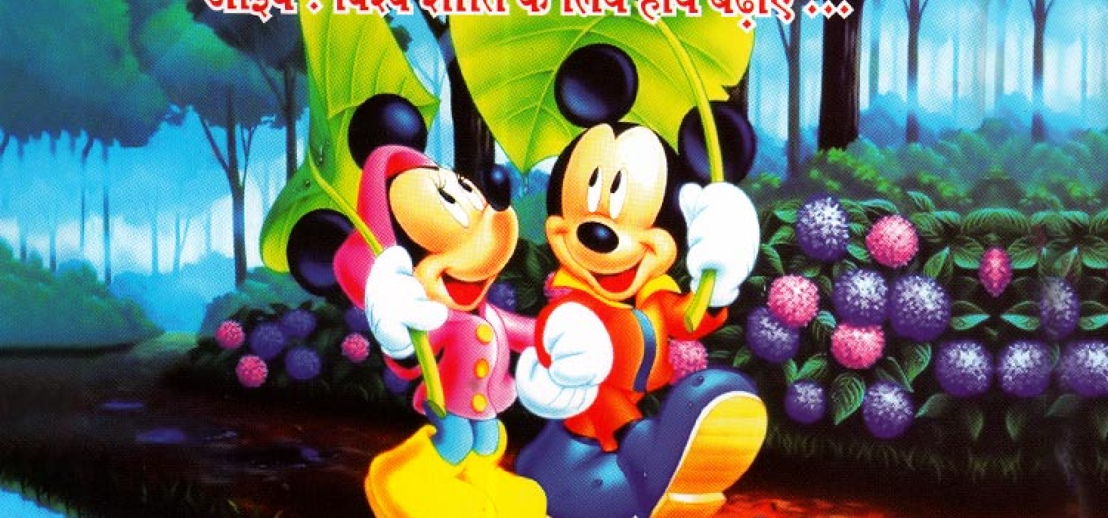

-: प्रकाशक :-

करुणा अन्तरराष्ट्रीय, चेन्नई

करुणा की कथाएं तथा मानवीय बोध कथाओं पर आधारित राष्ट्रीय प्रतियोगिता में विभिन्न क्षेत्रों में परीक्षा देते तथा पुरस्कार, प्रमाण-पत्र प्राप्त करते हर्षित-उत्साहित विद्यार्थीगण !

करुणा-प्रार्थना

सत्वेषु मैत्रीं गुणिषु प्रमोदं,
क्लिष्टेषु जीवेषु कृपा परत्वं ।
माध्यस्थ भावं विपरीत वृत्तौ,
सदा ममात्मा विदधातु देव ।।

अर्थात् - प्राणिमात्र के प्रति मैत्री, गुणज्ञों के प्रति प्रमोद, व्यथितों के प्रति करुणा एवं अपने से विपरीत भाव रखने वालों के प्रति तटस्थ-भाव हे प्रभो ! मेरी आत्मा में ये विचार सुस्थिर हों ।

विश्वमैत्री की मंगल कामना

मैत्री भाव का पावन झरना, मेरे हृदय में बहा करे ।
शुभ हो सारे विश्व जीवों का, नित्य भावना रहा करे ।।

गुणवानों के गुण दर्शन से, मन यह मेरा नृत्य करे ।
गुणीजनों के गुण पालन से, जीवन मेरा धन्य बने ।।

दीन, क्रूर और दयाहीन को, देख के दिल यह भर जाये ।
करुणा भीगी आँखों में से, सेवा भाव उभर आये ।

भूले भटके जीवन पथिक को, मार्ग दिखाने खड़ा रहूँ ।
करे उपेक्षा प्रेमपंथ की, तो भी समता चित धरूँ ।

"चित्रभानु" की यही भावना, मैत्री घर-घर सुख लाये ।
"करुणा क्लब" की यही भावना, मैत्री घर-घर सुख लाये ।
वैर-विरोध के भाव छोड़कर, गीत प्रेम के सब गाये ।।

*विद्यालय प्रार्थना के बाद **'करुणा-प्रार्थना'** का अर्थ सहित गान प्रतिदिन तथा **'विश्व मैत्री की मंगल कामना'** गीत का सप्ताह में किसी एक दिन सामूहिक गान कराना चाहिये ।*

करुणा अन्तरराष्ट्रीय संस्थान

- करुणा अन्तरराष्ट्रीय एक रजिस्टर्ड मुनाफा रहित संगठन है, जो विद्यालयों/महाविद्यालयों में करुणा क्लबों के माध्यम से विद्यार्थियों में मानवीय जीवन मूल्यों यथा- करुणा, अहिंसा, प्रेम, वैश्विक भाईचारा, प्रकृति-पर्यावरण की रक्षा एवं शाकाहार का प्रचार करता है ।

- वर्तमान में देश के विभिन्न राज्यों में गठित कुल 2150 करुणा क्लबें, 39 करुणा केन्द्रों एवं 800 कार्यकर्ताओं के माध्यम से संचालित हैं ।

- भारतीय जीव-जंतु कल्याण बोर्ड ने इस संस्थान को मान्यता प्रदान की है एवं प्रतिवर्ष सहयोग राशि भी प्रदान करता है ।

- संस्थान प्रति माह 'करुणा न्यूजलेटर' का प्रकाशन हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषा में संयुक्त रूप से करता है, जिसमें करुणा क्लबों की गतिविधियों के समाचार सचित्र प्रकाशित होते हैं ।

- करुणा एवं शाकाहार संबंधी साहित्य आवश्यकतानुसार प्रकाशित/वितरित करता है, साथ ही सी.डी./डी.वी.डी तैयार/संकलित/वितरित करता है ।

- राष्ट्रीय स्तर पर करुणा एवं मानवीय बोध कथाओं पर प्रतियोगी परीक्षा आयोजित करते हुए प्रतिवर्ष लगभग 3,00,000/- (तीन लाख) रुपये की राशि नगद पुरस्कार स्वरूप प्रदान की जाती है ।

- मानवीय शिक्षा पर आधारित एक दिवसीय प्रशिक्षण शिविर : शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रम- 5,000/- विद्यार्थी प्रशिक्षण कार्यक्रम- 3,000/- तथा अंतरविद्यालयीय प्रतियोगिताओं हेतु न्यूनतम 1,500/- एवं अधिकतम 3,000/- रुपये तक की राशि का आर्थिक सहयोग करुणा क्लबों/केन्द्रों को नियमानुसार प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने पर संस्थान द्वारा प्रदान किया जाता है ।

- अखिल भारतीय/क्षेत्रीय सम्मेलनों का आयोजन कर उत्कृष्ट करुणा क्लबों (विद्यालयों) एवं विद्यार्थियों को दयावान अवार्ड के रूप में लगभग एक लाख रुपए की राशि प्रतिवर्ष प्रदान की जाती है ।

पुस्तक : **करुणा की कथाएं, भाग-1**

मूल कृति : **Stories on Compassion**

हिन्दी अनुवाद : **डॉ. प्रतिभा जैन**, सहायक : **शिवानी अरोड़ा**

प्रकाशक : **करुणा अन्तरराष्ट्रीय,**
मुणोत सेन्टर, 2nd Floor,
343, ट्रिप्लीकेन हाई रोड, चेन्नई- 600 005.
फोन : **044-28591714, 28591724, 9551496900**
emai : info@karunainternational.org

प्रथम संस्करण : 2006,
2017 तक कुल 11 संस्करण, प्रतियां 29,000
बारहवां संस्करण : सितंबर 2019,
प्रतियां 3000, कुल प्रतियां 32,000

मूल्य : 30 रुपया

साज-सज्जा : **श्रीमती सुनीता जैन**, एम.ए., साहित्य रत्न, एम.लिब.

सम्पादक-मुद्रक : **डॉ. भद्रेशकुमार जैन**, प्रबंधक : **जैन प्रकाशन केन्द्र**
पुराना नं. **53**, आदियप्पानायकन स्ट्रीट, साहुकारपेट
चेन्नई - **600079. Cell : 93822 91400**

प्रकाशकीय

"करुणा की कथाएँ" करुणा अन्तरराष्ट्रीय का लोकप्रिय प्रकाशन है, जिसका हिन्दी अनुवाद अध्यापकों एवं विद्यार्थियों के कर कमलों में प्रस्तुत करते हुए हम अत्यन्त प्रमुदित है ।

सन् 2002 में भारतीय जीव-जन्तु कल्याण बोर्ड, चेन्नई द्वारा करुणा की कहानियों के 25 सेट करुणा अन्तर्राष्ट्रीय को प्राप्त हुए । प्रत्येक सेट में 4 पुस्तकें थी । लगभग 1000 पृष्ठों की विशालकाय सामग्री में विश्व की सर्वश्रेष्ठ करुणा-कहानियों का संकलन था । "डिवाइन लाइफ सोसायटी ऑफ साउथ अफ्रीका" द्वारा मुद्रित इन पुस्तकों की भाषा सरल एवं सरस थी । बोर्ड द्वारा प्रदत्त पुस्तकें करुणा क्लबों को गठित करने वाले 25 विद्यालयों को प्रेषित की गई । उन सभी विद्यालयों के अध्यापकों ने उक्त पुस्तकों की मुक्तकण्ठ से सराहना की, साथ ही साथ सुझाव भी दिया कि इन पुस्तकों की चुनिंदा करुणा-कहानियों की लघु पुस्तिका मुद्रित कर करुणा क्लब के सभी विद्यालयों में प्रेषित की जाय ।

अध्यापकों की भावना से प्रेरित हमनें "डिवाइन लाइफ सोसायटी ऑफ साउथ अफ्रीका" से अनुरोध किया कि चुनिंदा करुणा-कहानियों की लघु पुस्तिका प्रकाशित करने की हमें शीघ्र अनुमति प्रदान करें । डिवाइन लाइफ सोसायटी ने न केवल अनुमति प्रदान की अपितु सोसायटी की ओर से बहुरंगी 5000 पुस्तकें मुद्रित करके करुणा अन्तरराष्ट्रीय को प्रदान की । अंग्रेजी संस्करण के बाद हिन्दी भाषी क्षेत्रों के विद्यालयों के अध्यापको का यह निरन्तर अनुरोध रहा कि **"Stories on Compassion"** का हिन्दी संस्करण भी मुद्रित किया जाय ।

प्रस्तुत पुस्तिका को प्रकाशित करने का हमारा एकमात्र उद्देश्य बालक-बालिकाओं/विद्यार्थियों के हृदय में प्रत्येक जीव के प्रति प्रेम एवं करुणा की भावना का संचार करना है । हमारे देश के समस्त सन्तों-महापुरुषों ने कहा है कि यह चराचर विश्व ईश्वर की ही प्रतिकृति है । आज जो विश्व

में हिंसा और क्रूरता बढ़ रही है, उसका कारण है- मनुष्य ने जीव-जन्तुओं के प्रति अपने मधुर सम्बन्ध को विस्मृत कर दिया है तथा उनके प्रति निष्ठुर एवं क्रूर बन गया है । ऐसे विद्रूप वातावरण में विद्यार्थियों के हृदय में दया, करुणा एवं प्रेम की भावनाओं की स्थापित करने की नितान्त आवश्यकता है ।

प्राचीन काल से ही पशुओं, पक्षियों, अन्य जीव-जन्तुओं एवं पेड़-पौधों का पारिस्थितिकी (Ecology) से घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है । उनका विनाश होने से पर्यावरण का विनाश भी स्वतः ही हो जाता है अतः इन सब का संरक्षण करना मनुष्य के स्वयं के अस्तित्व के लिये भी अत्यावश्यक है ।

इस पुस्तक में संकलित कहानियां विद्यार्थियों एवं वयस्कों- दोनों के लिये समान रूप से उपयोगी हैं, जिनका संकलन भारतीय एवं पाश्चात्य स्रोतों से किया गया है। सभी कहानियाँ हृदयस्पर्शी एवं रोचक हैं । साथ ही साथ पुस्तिका में प्रत्येक कहानी से सम्बन्धित सुन्दर कार्टून/रेखाचित्र भी मुद्रित किये गये हैं ।

"Stories on Compassion" Part -1 पुस्तक को हिन्दी भाषा में अनूदित किया है- डॉ. प्रतिभा जैन, एम.ए., पी-एच.डी. ने । करुणा अन्तर्राष्ट्रीय उनका असीम आभारी है । पुस्तक के अनुवाद में शिवानी अरोड़ा का सहयोग भी हार्दिक प्रशंसनीय है ।

हमें विश्वास है कि इन कहानियों के माध्यम से हजारों-हजार ही नहीं अपितु लाखों विद्यार्थियों के हृदय में प्राणिमात्र के प्रति प्रेम एवं करुणा के भाव जाग्रत होंगे ।

दुलीचन्द जैन	कैलाशमल दुगड़	पदमकुमार टाटिया
चेयरमेन	अध्यक्ष	महामंत्री

करुणा की कथाएं - भाग 1

क्रम सं.	शीर्षक	लेखक	पृष्ठ सं.
1	बुद्ध की करुणा	साधु वासवानी	1
2	बैलों की कहानी	विशालाक्षी जोहरी	4
3	दया का मूल्य	क्रिस्टल रोजर्स	8
4	बदलाव	राल्फ वाल्डो ट्राइन	13
5	राजा शिबि और कबूतर	एन. सी. रंगस्वामी	15
6	दोस्त की तलाश में	विशालाक्षी जोहरी	19
7	शेर की गुफा में डैनियल	पमेला विल्सन	21
8	बच्चू की दीवाली	विशालाक्षी जोहरी	26
9	छोटी सी बछिया	क्रिस्टल रोजर्स	31
10	वफादार बॉबी	एन. सी. रंगस्वामी	37
11	प्राणरक्षा	विशालाक्षी जोहरी	39
12	ऋषि की करुणा	"रमण स्मृति"	48
13	क्रूर खेल	विशालाक्षी जोहरी	50
14	तीन दोस्त	विशालाक्षी जोहरी	53
15	महाराज युधिष्ठिर और कुत्ता	एन. सी. रंगस्वामी	58
16	असाधारण दोस्ती	अज्ञात	62
17	बन्दर ने माँगा न्याय	एफ. एच. खिस्ती	65
18	चूहे ने बदला आदमी	मुनि श्री चन्द्रप्रभसागरजी	68
19	बंदरिया का मातृ-प्रेम	"पूना हेराल्ड"	71
20	इतने भी मूक नहीं	"एनिमल वर्ल्ड"	76
21	आदमी के प्रिय दोस्त	डी. आर. ब्लेकमेन	80
22	शाकाहार सामग्री	आरती चौबे	83

बुद्ध की करुणा

भगवान बुद्ध राजगीर में पधारे हैं। एक दिन भ्रमण करते-करते उनकी नज़र उद्यान में खिले हुए फूलों पर पड़ी। टकटकी लगाते हुए उन्होंने कहा - "ओ उद्यान के वृक्ष और फूल ! कितने विश्वास के साथ तुम अपना चेहरा सूरज की ओर कर लेते हो, और कितने विश्वास के साथ कबूतर और बुलबुल तुम पर आश्रय लेते हैं। मगर हाय! मनुष्य को देखो ! वह पक्षियों को सताता है और जानवरों को मारता है। उसकी समझ रक्तरंजित हो गई है।"

तभी भेड़-बकरियों का एक झुण्ड वहाँ से निकला। बुद्ध ने देखा कि गड़रिया बड़ी मुश्किल से झुण्ड को हाँक रहा है।

"क्या बात है भाई ?" - बुद्ध ने पूछा।

गडरिये ने कहा - "उस झुण्ड में एक मेमना है जो लंगडा रहा है। झुण्ड के साथ-साथ चलने में उसे बहुत तकलीफ हो रही है।"

बड़े प्यार से बुद्ध ने लंगड़ाते हुए मेमने को अपने कंधे पर बिठा लिया।

बुद्ध ने फिर गड़रिये से पूछा - "दोस्त, इस तपती दोपहरी में तुम झुण्ड को कहाँ लिए जा रहे हो?"

गड़रिये ने कहा - "मुझे आदेश मिला है कि सौ भेड़-बकरियाँ राजा के पास पहुँचा दूँ, शाम को होने वाले यज्ञ में इनकी बलि दी जाएगी।"

बुद्ध शांत स्वर में बोले - मैं भी साथ चलूँगा।"

नगर में साथ-साथ प्रवेश करते हैं, भगवान बुद्ध और उनकी बगल में गडरिया। बुद्ध चुपचाप मेमने को कंधे पर बिठाकर बाज़ार को पार करते हैं। बाज़ार में खरीददार उन्हें देखकर ज़रा सा रुक जाते हैं। और

नारियाँ घरों के द्वार खोलकर निहारती हैं कि कैसी सौम्य और निर्मल छवि है, शांति के इस पुजारी की । वे आगे बढ़ते हैं । कई लोग उन्हें निहार रहे हैं, बार-बार । कई हैं जो उन्हें नही जानते । मगर उनके बारे में सुना है और कहते हैं - "देखो उस पवित्र इंसान को जो पहाड़ी पर निवास करता है ।"

चलते-चलते बुद्ध वहाँ पहुँचते हैं जहाँ यज्ञ की तैयारी चल रही है । वहाँ कसाई बलि वाले मेमने पर वार करने ही लगा कि बुद्ध बोल उठे - "राजन् ! प्रहार होने से रोकिए । मेरी जिंदगी की बलि ले लीजिए, मगर हे राजन् ! इस मेमने को छोड़ दीजिए ।"

ये शब्द राजा के अंतर्मन को छू जाते हैं । बुद्ध को प्रणाम करके विनति करते हैं कि प्रजा से कुछ कहें । इस अवसर पर बुद्ध कुछ ही शब्द कहते हैं -

"हे बंधुओं ! प्राण लेना आसान है, मगर याद रखो, तुम में से कोई भी जीवन दे नहीं सकता । इसलिए दया करो, करुणा करो । कभी मत भूलो कि करुणा ही मनुष्य को महान् और विश्व को सुन्दर बनाती

है । यह भी याद रखो कि सभी प्राणी मैत्री की डोर से जुड़े हुए हैं । इसलिए संकल्प करो कि तुम सभीं हिंसा-रहित आहार पर जीओगे । सच है ! करुणा ही जीवन का ताज है ।"

अगले दिन राजा ने घोषणा करवाई- "राजाज्ञा है कि आज से कोई भी भोजन या मनोरजंन के लिए पशुबलि नहीं देगा । सबका जीवन एक-सा है तथा दया और करुणा ही जीवन के ताज हैं ।"

-: प्रश्नावली :-

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखें -

1. गडरिये को भेड़ों के झुण्ड को हाकने में कठिनाई क्यों हो रही थी ?
2. बुद्ध ने लंगडाते हुए मेमने को देखकर क्या किया ?
3. गडरिया भेड़ों के झुण्ड को कहॉं ले जा रहा था ?
4. बुद्ध ने राजा से क्या कहा ?
5. बुद्ध ने प्रजा को क्या उपदेश दिया ?

- *अपने बुजुर्गों से इस कहानी की चर्चा करते हुए पशुबलि के पीछे छुपे अन्धविश्वास का पता लगाइए ।*

बैलों की कहानी

रामू अपनी बैलगाड़ी बाज़ार की ओर ले जा रहा था ऊपर आसमान में एक हवाई जहाज़ चक्कर काट रहा था मानो धीरे-धीरे चलती इस बेचारी बैलगाड़ी का मज़ाक उड़ा रहा हो ।

"ओह, तुम दोनों बड़े ही सुस्त हो !" रामू बैलों पर चिल्लाया- "देखो उस हवाई जहाज़ को । कितना फुर्तीला है ! न उसे घास चाहिए न चारा । मैं तुम्हारी कितनी देखभाल करता हूँ - खिलाता हूँ, नहलाता हूँ, फिर भी तुम तेज़ नही चलते ।"

और वह दोनों बैलों को बेरहमी से ऊबड़-खाबड़ रास्ते पर दौड़ाने लगा ।

बेचारे दोनों बैल ! दूसरे ही दिन दोनों बीमार पड़ गए । गाँव के वैद्य ने देखा और कहा कि ये दोनों थके हुए हैं और एक हफ्ते तक तो काम नहीं कर सकेंगे ।

रामू फूट-फूटकर रोने लगा । उसकी सारी सब्ज़ियाँ सड़ जाएँगी अगर वह रोज़ का रोज़ उन्हें बेच नहीं पाएगा । अपने परिवार के लिए वह पैसे कहाँ से लायेगा ?

वैद्यराज ने रामू से कहा कि खुद ही बैलगाड़ी खींचकर बाज़ार ले जाए और अपना सामान बेच आये । रामू के पास और कोई चारा भी नहीं था। उसने सब्ज़ियों की गठरियाँ बैलगाड़ी में रखी और धीरे-धीरे बैलगाड़ी को खींचने लगा । वाकई में, गाड़ी पूरी भरी होने से बहुत भारी थी । सड़क तक भी खींच नहीं सका । उसने अपने दोस्त किशन को आवाज़ दी और मदद के लिए पुकारा । मगर किशन ने कहा कि वह बहुत व्यस्त है । अब रामू ने एक नौकर तय किया । दोनों ने मिलकर बैलगाड़ी को खींच तो लिया, मगर एकदम धीरे-धीरे । रामू पसीने और धूल से लथपथ हो गया और बुरी तरह खीज उठा ।

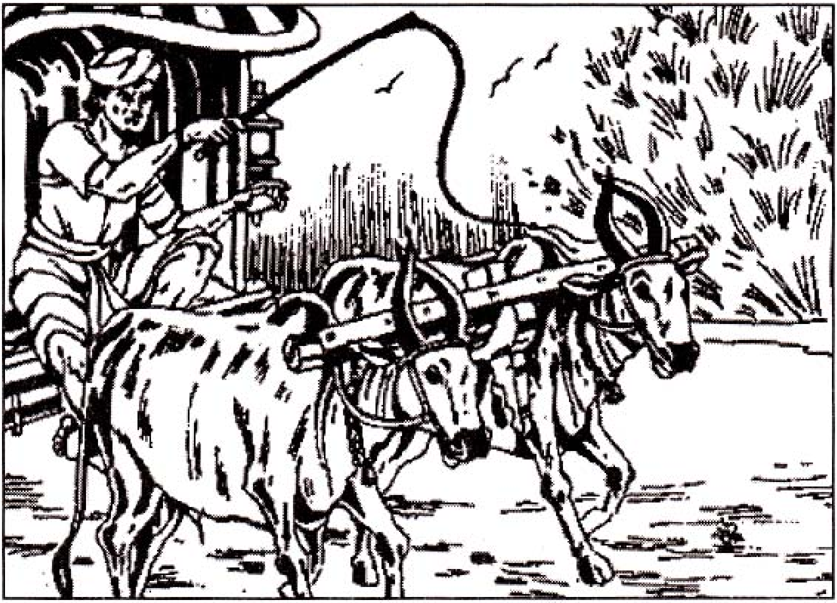

ऊपर आसमान में हवाई जहाज़ मज़े से चक्कर काट रहा था ।

तब रामू सोचने लगा- "इस हवाई जहाज़ का क्या फायदा ? न ही सड़क पर चल सकता है और न ही मेरा सामान बाज़ार पहुँचा सकता है ।"

अचानक उसे अपने दोनों बैलों की याद आई । किस बेरहमी और बेइंसाफी से उसने अपने वफादार और हृष्ट-पुष्ट बैलों से भार उठवाया था ।

"भगवान ने मुझे मेरे किए की सज़ा दी है ।" वह रो पड़ा ।

बस, किसी तरह वह बाज़ार पहुँचा और सब्ज़ियाँ बेच डाली । उसने नौकर को पैसे दिये और अपनी झोंपड़ी लौटा ।

गौशाला में जाने से घबरा रहा था, पता नहीं उसके बैल जिन्दा भी थे या नहीं ? चुपचाप एक कोने में जा बैठा ।

उसकी बेटी लीला कुछ घास लिए जा रही थी । उसने पूछा-

"लीला, घास कहाँ ले जा रही हो ?"

"बैलों के लिए," लीला हँसी । "और कौन है घास खाने वाला ?"

रामू खुशी से उछल पड़ा - लाओ, अपने हाथों से खिलाऊँगा दोनों को ।"

वह भागते हुए गौशाला पहुँचा । दोनों बैल खड़े थे । आज पहली बार उसे लगा कि दोनों कितने बलवान हैं, कितने हृष्टपुष्ट और सुन्दर ! उसने दोनों को पुचकारा, सहलाया, बड़े प्यार से चारा खिलाया । इतने में वैद्यराज भी गुड़ और दवाईयाँ लेकर आ पहुँचे ।

रामू ने चिन्ता से पूछा-"दोनों ठीक हो जाएँगे ना ?" वैद्य ने हामी भरी और दवाई की गोलियाँ बैलों के गले में डाल दी ।

फिर उन्होंने मुड़कर कहा- "रामू, ये वफादार जानवर हमारे सबसे अच्छे दोस्त हैं । इनके बिना हम जी नहीं सकते । अगर तुम बेवकूफ बनकर इनके साथ बुरा सलूक करोगे, तो अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मारोगे ।"

रामू का सिर शर्म से झुक गया । कुछ ही दिनों में बैल स्वस्थ होकर गाड़ी खींचने लायक हो गये । अब जैसे ही हवाई जहाज़ दिखा, रामू खुशी से गाने लगा - "चाहो तो चिढ़ा लो, मगर अब मैं हूँ नहीं मूर्ख । तुम एक उड़ती हुई तितली हो, मगर मेरी बैलगाड़ी है एक मेहनती चींटी ।"

उस दिन से रामू ने अपनी बैलगाड़ी पर कभी ज्यादा बोझ नहीं लादा और न ही अपने बैलों से ज्यादा काम करवाया । उन्हें अच्छी तरह से खिलाने-पिलाने लगा और उन्होंनें भी अपने मालिक की खूब सेवा की ।

-: प्रश्नावली :-

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखें –

1. रामू अपने बैलों के साथ कैसा व्यवहार करता था ?
2. बैल बीमार क्यों पड़े ?
3. रामू ने बैलों की अनुपस्थिति में सब्जियाँ कैसे बेचीं ?
4. वैद्य ने रामू को बैलों के साथ कैसा व्यवहार करने की सलाह दी ?
5. रामू के व्यवहार में कैसा परिवर्तन आया ?
6. इस कहानी से तुम्हें क्या शिक्षा मिलती है ?

■ *एक बैलगाड़ी वाले से मिलकर उससे हुई बातचीत का विवरण लिखें ।*

दया का मूल्य

किशन अपने घर से मुख्य गली तक खुशी से झूमता हुआ चला, सोच सोचकर पागल हुआ जा रहा था कि बाज़ार से क्या खरीदेगा । उसके मामा ने जो कुछ दिनों के लिए आए हुए थे, उसे दो रुपये दिए थे । अरसे बाद किशन को इतने पैसे मिले थे, अपनी मनपसंद चीज लेने के लिए ।

वह जैसे-जैसे दुकानों के पास पहुँचा, सोचने लगा कि क्या खरीदे- कंचे का वह डिब्बा, जो सड़क पार रहने वाले उसके दोस्त प्रेम के डिब्बे से भी बड़ा और बेहतर था । या फिर चार धार वाला चाकू जो उसने कोने वाली दुकान पर देखा था, जिसका दाम हाल ही में चार रुपये से घटकर डेढ़ रुपये हो गया था ।

पास ही छोटी गली के नुक्कड़ पर बूढ़ा हबीब अली, जो चिड़िया बेचता था, बबूल की छाँव में बैठा ऊँघ रहा था । कुछ ही फर्लांग की दूरी पर चार-पाँच पिंजरे पड़े थे, एक को छोड़कर बाकी खाली थे । सबसे छोटे पिंजरे में एक अकेला हरा तोता बैठा था, कड़कती धूप में बेहाल ।

पिंजरे में न खाना था न पानी, न ही ज़रा-सी छाँव; जिसमें उसके गर्मी से तपते शरीर को राहत मिले । प्यास से उसकी जीभ सूख गई थी, और पिंजरे से निकलने की चेष्टा में उसने अपने शरीर को इतना घुमाया और मरोड़ा कि अब उसका रोम-रोम दर्द कर रहा था । और तो और, ऐसा करने से उसके कई पंख टूट चुके थे । इसलिए अभी तक वह बिका भी नहीं था, जबकि उसके अन्य साथियों को खरीददार ले जा चुके थे ।

सिर्फ तीन दिन पहले वह जंगल में आज़ाद उड़ रहा था, अपने साथियों के साथ खुशी-खुशी चहकता हुआ, हर तरह की चिंता से बेखबर । मगर अब उसका जीवन एक बुरे सपने के समान हो गया

था । पहले तो जाल में फँसा, जहाँ से बचने की उसने नाकाम कोशिशें की, और बाद में डरे, सहमे, चीखते तोतों के साथ टोकरे में फँसा दिया गया । और सफर के अंत में उन सभी को छोटे-छोटे पिंजरों में बंद कर दिया गया, जिनमें न तो पंख फैलाने की जगह थी और न ही हिलने की ।

पिंजरे में वह तोता सूनी आँखों से नीचे पड़ा था, इतनी देर तक बिना हिले-डुले, कि देखने वाला तो यही समझता कि वह मरा हुआ है ।

अचानक एक भूखे कुत्ते के सूँघने से तोता सहम उठा । जोर से चीखता हुआ वह पिंजरे की सलाखों पर अपने पंख मारने लगा ।

उसी पल में किशन झूमता हुआ कोने से आया, मुट्ठी में दो रुपये दबाये हुए ।

बस, किशन की एक ही चिल्लाहट से कुत्ता दुम दबाकर भाग पड़ा । धीरे से नीचे झुककर किशन ने देखा तोते के खून से लथपथ पंखों को और उसकी उदास और पीड़ित आँखों को ।

"अपने तोते को इतने छोटे पिंजरे में क्यों रखते हो ?" उसने चिड़ियाँ बेचने वाले से पूछा ।

हबीब अली जो अब उठ चुका था, अपनी मुस्कान के साथ ग्राहक की सेवा में तैयार हो गया ।

"यह पिंजरा मज़बूत है, एकदम लाजवाब", हबीब अली ने जवाब दिया । उसे हैरत हुई कि खरीदने वाला यह भी देखता है कि पिंजरा कितना बड़ा है । उसने उत्सुकता से कहा, "तुम्हें तोता चााहिए ? यह खूब बोलता है ।"

"कितने का है?" किशन अपनी मुट्ठी में दो रुपयों को दबाए हुए सोचने लगा कि उसका अपना तोता होगा तो कितना मज़ा आएगा ।

"तोते के तीन रुपये, पिंजरे के दो, दुकानदार ने अंदाज़ लगाया कि किशन की उम्र के बालक के पास कितने रुपये होंगे ।

किशन निराश होकर मुड़ गया । बहुत बुरा हुआ । कितना अच्छा होता अगर उसके पास एक तोता होता, और उस उदास तोते को तो वह छोड़ना ही नहीं चाहता था ।

"रुको, रुको !" हवीब अली चिल्लाया, किशन के पीछे-पीछे पिंजरे को लेकर चलते हुए । "देखो, आज मैं सस्ते में बेच रहा हूँ । यह मेरा आखिरी पक्षी है । तुम्हीं ले लो - एक रुपये का तोता और एक का पिंजरा ।"

एक पल के लिए किशन हिचकिचाया । उसकी आँखों के सामने कंचे और चार धार वाले चाकू की तस्वीर छाई, मगर तुरन्त ही मिट गई ।

"ठीक है," उसने जल्दी से दो रुपये निकाले, इससे पहले कि हबीब अली अपना मन बदल ले ।

थोड़ी ही देर में किशन ने माँ को अपनी खरीददारी दिखाई ।

"मुझे पता है कि यह पिंजरा बहुत छोटा है ।" उसने कहा, "पर मैं अपना सारा जेब खर्च बचाऊँगा और इसे एक बड़ा पिंजरा लाकर दूँगा ।"

"मगर किशन," माँ ने सोचते हुए कहा, "यह एक जंगली तोता है । शायद कुछ ही दिन पहले पकड़ा गया होगा । जंगल में आज़ादी से उड़ने वाले पंछी को तुम कैद में रखना चाहते हो ?"

"यह पालतू बन जायेगा, है ना ?" बालक ने परेशानी से पूछा । "क्या इसे रखना निर्दयता होगी ?"

उसी पल कुछ तोते चहचहाते हुए ऊपर से उड़े, एक दूसरे से बतियाते हुए । पिंजरे में बंद तोता उन्हें पुकारते हुए अपनी कैद की सलाखों पर बेबसी से पंख मारने लगा ।

किशन को अब माँ के जवाब की ज़रूरत नहीं पड़ी । उसने बड़ी सावधानी से पिंजरे का दरवाज़ा खोला, तुरन्त ही तोता बाहर आ धमका और खुशी से चहचहाता हुआ अपने साथियों से जा मिला ।

किशन की माँ मुस्कुरा उठी और किशन भी मुस्कराने लगा ।

"मुझे खुशी हुई कि वह चला गया," उसने कहा । "पिंजरे में बिलकुल अच्छा नहीं लगता होगा । मगर मामा के दिये हुए दो रुपये ?"

"यह मेरा दावा है," माँ धीरे से बोली, "कि जो खुशी तुम्हें इन दो रुपयों के खर्च से मिली है, वैसी जीवन में आज तक किन्हीं भी दो रुपयों से नहीं मिली होगी ।"

और बाद में जब भी किशन को यह घटना याद आती, उसे लगता कि माँ की कही हुई बात एकदम सच थी ।

-: प्रश्नावली :-

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखें-

1. किशन ने जेब खर्च के पैसों से क्या खरीदा ?
2. किशन ने पक्षी बेचने वाले से क्या पूछा ?
3. किशन पक्षी के लिए क्या करना चाहता था ?
4. किशन का मन कैसे बदला ?
5. किशन ने आखिर में क्या किया ?

■ *अपने हमउम्र विद्यार्थियों के साथ विचार/चर्चा करें-*
"क्या पिंजरे में पक्षियों को बंद रखना उचित है ?"

बदलाव

रूस के महान् उपन्यासकार टरजैनिफ अपने जीवन की ऐसी मार्मिक घटना बताते हैं, जिससे उनकी लेखनी गंभीर और कोमल भावनाओं से सजीव हो उठी ।

जब वह दस साल का था, तब एक दिन उसके पिता उसे पक्षियों के शिकार पर ले गए । खेतों की फसल काटी जा चुकी थी । जैसे ही वे सूखे ठूँठों के बीच से निकल रहे थे, अचानक एक सुनहरी तीतर बालक के पैरों के पास से नीची उड़ान भरते हुए ऊपर की तरफ उड़ी । बालक की नसों में एक शिकारी का गरम खून दौड़ रहा था । उसने अपनी बंदूक उठाई और तीतर पर निशाना साध दिया । तुरन्त ही वह तीतर फड़फड़ाती हुई उसके पास आ गिरी ।

पल-पल में ज़िंदगी रुकती जा रही थी । फिर भी उस बहादुर पक्षी की ममता तो देखिए । अपने पंख कमजोरी से फड़फड़ाते हुए वह अपने घोंसले तक पहुँची जहाँ उसके नन्हें बच्चे एक गुट में थे, खतरे से

बेखबर । फिर उस पक्षी ने बालक की तरफ देखा । उसकी नज़र में इतनी याचना थी, और तिरस्कार भी कि बालक वहीं पर जड़ हो गया । अब पक्षी का सुनहरा सिर पीछे की तरफ गिरा, मगर मृत्यु के उस पल में भी माँ का मृत शरीर अपने बच्चों का कवच बन गया ।

"पापा, पापा, यह मैंने क्या किया ?" बालक ख़ौफ से चीख उठा । मगर पिता की आँखों ने इस दर्दनाक हादसे को नहीं देखा था और उन्होंने कहा– "अच्छा किया बेटे ! तुमने अपना पहला शिकार अच्छी तरह किया है । जल्द ही तुम एक निपुण निशानेबाज़ बन जाओगे ।"

"नहीं पापा, कभी नही ! मैं किसी भी प्राणी की जान नहीं लूँगा । क्या इसे ही खेल कहते हैं ? नहीं पापा ! मेरे लिए जिंदगी मौत से ज्यादा हसीन है, और चूंकि मैं ज़िंदगी नहीं दे सकता, तो ले भी नहीं सकता ।"

-: प्रश्नावली :-

निम्नलिखित प्रश्नों उत्तर लिखें–

1. बालक टरजैनिफ ने अपनी बन्दूक से क्या किया ?
2. घायल पक्षी ने क्या किया ?
3. बालक ने अपने पिता से क्या कहा ?
4. वह दोबारा शिकार क्यों नहीं करना चाहता था ?
5. अगर तुम्हें एक घायल पक्षी दिखे तो क्या करोगे ?

राजा शिबि और कबूतर

यह उन दिनों की बात है जब अयोध्या में राजा शिबि का राज था । वह एक महान् राजा थे, अपनी न्यायप्रियता के लिए प्रसिद्ध एवं पशु पक्षियों के प्रति दयालु ।

एक दिन, जब राजा अपने सिंहासन पर बैठकर राज्य का हालचाल देख रहे थे, एक कबूतर उनकी गोद में उड़ता हुआ आया ।

"मुझे बचाओ !" कबूतर ने हाँफते हुए कहा, 'और निर्दय शत्रु से मेरी रक्षा करो ।"

बेचारा पक्षी ! उसके पँख नोच लिए गए थे । खून से लथपथ, एकदम दयनीय दिख रहा था ।

राजा शिबि ने बड़ी कोमलता से उसके पंख थपथपाए- "डरो मत कबूतर ! अब तुम मेरी शरण में हो, मैं तुम्हारा ख्याल रखूँगा । किसी भी कीमत पर तुम्हारे प्राणों की रक्षा करूँगा ।"

तभी एक बड़ा-सा बाज उड़ता हुआ उस सभा में आया । वह अपने शिकार की खोज में वहाँ तक आ पहुँचा था । उसे देखकर राजा की गोद में रहते हुए भी कबूतर काँपने लगा ।

बाज ने राजा से इस तरह बात की – "हे महान् राजन् ! मैं एक शिकारी पक्षी हूँ । दूसरे पक्षियों को मारकर अपना भरण-पोषण करता हूँ । मैंने इस कबूतर को लगभग मार ही दिया था कि वह आपकी शरण में आ पहुँचा । मगर राजन् ! क्या आप जानते हैं कि इस कबूतर को बचाने से आप न सिर्फ मेरी, बल्कि मेरे सारे परिवार की मौत का कारण बन जाएँगे ? क्या यह उचित है ? अगर आप मेरे और मेरे परिवार के

प्रति इस तरह अन्याय करेंगे, तो आपको एक गुणवान और न्यायप्रिय राजा कैसे कहा जा सकता है ?''

''अच्छा, यह बात है !'' राजा ने समझते हुए कहा। ''तुम नाराज़ हो क्योंकि तुम अपना शिकार गँवा चुके हो। मगर मैं तुम्हें यह कबूतर नहीं दे सकता क्योंकि इसे मैंने अपनी शरण में ले लिया है। इसे तुम्हारे हवाले कैसे करूँ ? इसके बदले में तुम अपने और अपने परिवार के भोजन के लिए कुछ भी मनपसन्द चीज़ माँग सकते हो। बताओ, तुम्हें क्या चाहिए ? जो चाहो, प्रचुर मात्रा में मिलेगी।''

''बहुत अच्छा'', बाज ने सोचते हुए धीरे से कहा, ''आप कहते है कि जो भी चाहूँ वही माँग लूँ। अगर मुझे कबूतर के वज़न जितना आपका माँस मिल जाए, तो मैं संतुष्ट हो जाऊँगा।''

राजा ने तुरन्त ही इस विचित्र माँग को मान लिया और एक तराजू लाने का आदेश दिया। तराजू के एक पलड़े में कबूतर को रखा गया। अब, दूसरे पलड़े में उनके माँस के टुकड़े के ऊपर टुकड़े रखे गए, ताकि वज़न बराबर हो जाए। मगर एक अनहोनी बात होने लगी।

जैसे-जैसे वे अपने शरीर का माँस काट-काटकर पलड़े में रखते गए, कबूतर का वज़न बढ़ता गया । कुछ ही देर में उनके शरीर में सिर्फ हड्डियों का ढाँचा ही रह गया, मगर राजा अविचलित रहे । उन्हें सिर्फ यह आशंका हुई कि कहीं अपना वचन निभाने के पहले उनके प्राण न निकल जाएँ, इसलिए वे तुरन्त ही दूसरे पलड़े में जा बैठे, अपना बलिदान पूर्ण करने ।

यह देखकर रानी, मंत्रीगण और बाकी के सभासद व्यथित हो उठे । चारों ओर विलाप ही विलाप होने लगा । लेकिन राजा शिबि बिना विचलित हुए प्रसन्न मुद्रा में बैठे रहे, क्योंकि उन्हें अपने शरणागत की प्राण-रक्षा की खुशी थी ।

उन्होंने कहा – "मैं यहाँ बड़े या छोटे पर, बाज या कबूतर पर, राज करने नहीं बैठा हूँ । मैं यहाँ पर धर्म और न्याय के रक्षक के रूप में बैठा हूँ । अगर मैंने अपने कर्तव्य से मुँह मोड़ा, तो मेरी प्रजा भी वैसा ही करेगी, और चारों तरफ अधर्म और अन्याय फैल जाएगा ।"

जैसे ही राजा ने ये महान् शब्द कहे, आकाश में देवदूत और अप्सराएँ प्रकट हुए और एक ऊँची आवाज़ सुनाई दी – "रक्षा हो गई, हो गई ।"

पता नहीं, आवाज़ कहाँ से आई थी ? सभी चारों ओर देखने लगे । बाज वहाँ से अदृश्य हो चुका था । अब वहाँ सिर्फ कबूतर ही था ।

कबूतर ने कहा, "राजन् ! हैरान मत होइए । मैं समझाता हूँ । न ही मैं कबूतर हूँ और न ही वह एक बाज । वह थे इन्द्रदेव और मैं हूँ अग्निदेव । जब हमने पशु-पक्षियों के प्रति आपकी असीम करुणा के बारे में सुना तो परीक्षा लेने आ गए । हम संतुष्ट हुए । अब आप अपने शरीर

को पहले जैसा ही पाएँगे – पूर्ण, बलवान और सुन्दर ।" तुरन्त ही राजा का शरीर पहले जैसा हो गया ।

कबूतर ने आगे कहा – "हे राजा शिबि ! आप दीर्घायु होंगे और सुखपूर्वक राज्य करेंगे । आपका नाम युग-युगान्तर तक लिया जाएगा, और आपके यश और शौर्य की गाथा अमर रहेगी ।"

-: प्रश्नावली :-

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखें ।

1. राजा शिबि के पास रक्षा के लिये कौन आया ? क्यों ?
2. राजा शिबि ने पक्षी से क्या कहा ?
3. "मुझे पक्षियों को भोजन के लिये मारना पड़ता है । क्या तुम जानते हो कि इस पक्षी को बचाकर, तुम न केवल मेरी मौत का कारण बनोगे आपितु मेरे परिवार की मौत का कारण भी ।" ये शब्द किसने किससे कहे ?
4. राजा शिबि ने बाज को क्या उपाय बताया ?
5. कबूतर और बाज कौन थे ?

■ *'मैं यहाँ पर धर्म और न्याय के रक्षक के रूप में बैठा हूँ । अगर मैंने अपने कर्त्तव्य से मुँह मोड़ा तो मेरी प्रजा भी वैसा ही करेगी और चारों तरफ अधर्म और अन्याय फैल जाएगा ।' राजा शिबि के इस कथन पर वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन कीजिए ।*

दोस्त की तलाश में

फूलों से लदे पेड़ से पूछा इक सवाल -
"क्या तुम बनोगे मेरे दोस्त, खेलोगे मेरे साथ ?"
"खोदकर मेरी जड़ों को तुम, फल खा जाते हो,
बनूँगा नहीं तुम्हारा दोस्त, खेलूँगा नहीं साथ ।"
दिया उसने जवाब ।

गूँजन करती मधुमक्खी से पूछा इक सवाल -
"क्या तुम बनोगी मेरी दोस्त, खेलोगी मेरे साथ ?"
"शहद मेरा चुराते हो और करते हो मज़ाक,
बनूँगी नहीं तुम्हारी दोस्त, खेलूँगी नहीं साथ ।"
दिया उसने जवाब ।

माणिक आँखों वाले खरगोश से पूछा इक सवाल -
"क्या तुम बनोगे मेरे दोस्त, खेलोगे मेरे साथ ?"
"पीछा मेरा करते हो और मार डालते हो,
और मुझे भूनकर अपना भोजन बनाते हो !
बनूँगा नहीं तुम्हारा दोस्त, खेलूँगा नहीं साथ ।"
दिया उसने जवाब ।

लंगड़ाते हुए तोते से पूछा इक सवाल -
"क्या तुम बनोगे मेरे दोस्त, खेलोगे मेरे साथ ?"
"नोचकर मेरे सुन्दर पंख, उड़ने नहीं देते हो,
बनूँगा नहीं तुम्हारा दोस्त, खेलूँगा नहीं साथ ।"
दिया उसने जवाब ।

स्वच्छन्द उड़ती तितली से पूछा इक सवाल -
''क्या तुम बनोगी मेरी दोस्त, खेलोगी मेरे साथ ?''
''आलपिन से मुझे चिपकाना, पाप नहीं मानते हो,
बनूँगी नहीं तुम्हारी दोस्त, खेलूँगी नहीं साथ ।''
दिया उसने जवाब ।

अब मैं रहा अकेला और हुआ बड़ा उदास,
''क्या मैं इतना बुरा हूँ कि कोई नहीं आता पास ?''
मन में आया विचार ।

फूलों वाले पेड़ के पास जाकर कहा-
''किया मैंने नुकसान तुम्हारा, माफ कर दो ज़रा''
गूँजन करती मधुमक्खी से ऊँचे स्वर में कहा-
''नहीं लूँगा शहद सारा, करूँगा नहीं चोरी ।''
आँसू रोककर खरगोश से वादा मैंने किया-
''पीछा नहीं करूँगा कभी, ज़रा भी मत डरो ।''
तोते के पास जाकर माफी माँगने लगा-
''क्रूरता नहीं करूँगा कभी, अच्छा मैं बनूँगा ।''
तितली के पास जाकर पश्चाताप करने लगा-
''आलपिन से तुम्हें कभी नहीं चिपकाऊँगा ।''
एक बार फिर सभी से आशा से किया सवाल,
''क्या तुम मेरे दोस्त बनोगे, खेलोगे मेरे साथ ?''
सभी मुस्करा उठे और हँसकर दिया जवाब,
''आओ मिलाएँ हाथ''

शेर की गुफा में डैनियल

जब बेबीलोन के राजा ने जेरुसेलम पर हमला किया, और कई यहूदियों को कैदी बनाकर बेबीलोन ले गए, तब यहूदी ये मानने लगे कि भगवान ने उनका साथ छोड़ दिया है । वे इसलिए भी निराश थे क्योंकि राजा सोलोमन द्वारा बनाया गया मन्दिर भी लूटा जा चुका था । उन नादान लोगों को समझ नहीं थी कि भगवान का पूरी पृथ्वी पर राज था, और वे जहाँ कहीं भी होंगे, भगवान उनके साथ ही होगा ।

मगर उनमें एक ऐसा कैदी था जिसे विश्वास था कि भगवान उसका ख्याल रखता है ओर उसे भगवान की आज्ञा का पालन करना चाहिये । उस कैदी का नाम था डैनियल और वह राजा के महल में काम करता था ।

राजा ने निर्देश दिया था कि महल के सभी कर्मचारियों को सबसे बढ़िया भोजन और शराब मिलनी चाहिए, साथ ही उन्हें शिक्षित भी किया जाए । परन्तु डैनियल ने शाही भोजन और शराब, दोनों से इन्कार कर दिया । उसने मुख्य रसोइए से शाकाहारी भोजन और दूध की याचना की ।

रसोइए ने जवाब दिया – "युवक ! अगर तुम हृष्ट-पुष्ट और सुडौल नहीं बने, तो राजा मेरा सिर काट देंगें ।"

डैनियल ने इतना ही कहा, "सिर्फ दस दिन की मोहलत दीजिए और देखिए" दस दिन बीतने पर डैनियल और बलवान दिखने लगा ।

डैनियल के पास एक दिव्य शक्ति थी । वह सपनों और दिव्य दृष्टियों के गूढ़, छिपे हुए अर्थ बता सकता था । अक्सर राजा उसे बुला

लेते थे, अपने सपनों को समझने के लिए। डैनियल जानता था कि वह भगवान की मेहरबानी से ही यह सारे रहस्य समझ सकता था। वह राजा से भी यही बात कहता और भगवान का शुक्रिया मानता।

राजा अंतर्मन से डैनियल पर विश्वास करते थे क्योंकि उसकी बताई हुई बातें हमेशा सच निकलती थीं। उससे खुश होकर राजा ने डैनियल को राज-दरबार में एक ऊँचे पद पर बिठाया। उसे एक बैंगनी रंग का लिबास पहनाया और एक सोने का हार भी भेंट किया।

जब बाकी दरबारियों को पता चला कि डैनियल को शीघ्र ही राज्य में सबसे ऊँचा पद दिया जायेगा, तो उन्हें ईर्ष्या होने लगी। उन्होंने उसके खिलाफ षड्यंत्र रचा।

वे राजा के पास गए और उन्हें मनाकर एक कानून लागू करवाया कि अगर राज्य में कोई भी व्यक्ति राजा के अलावा किसी और की पूजा करेगा, तो उसे शेर की माँद में फेंक दिया जायेगा।

डैनियल बहुत धार्मिक था। वह दिन में तीन बार एक खिड़की के पास बैठकर भगवान से प्रार्थना करता था। वह खिड़की ऊपरी मंजिल वाले कमरे में जेरुसेलम की दिशा में स्थित थी। डैनियल ने नए कानून के बारे में सुना, फिर भी बिना विचलित हुए खिड़की खोलकर वह अपनी प्रार्थना करता रहा।

दरबारी तुरन्त ही राजा के पास जाकर बोले – "हे राजन ! एक व्यक्ति ने आपके कानून का उल्लंघन किया है। क्या आप उसे शेर की माँद में फेंकने का आदेश देंगे ?"

"अवश्य !" राजा ने कहा। "मगर कौन है वह ?"

"यहूदी कैदी डैनियल। वह अब भी अपने भगवान की पूजा करता है।"

"मूर्खों ! तुमने मुझे धोखा दिया है ! मगर मैंने अपना वचन दिया है । जाओ, उसे शेर की माँद में फेंक दो । मगर धोखेबाजों, देखते जाओ । उसका भगवान उस पर ज़रूर रहम करेगा । और तुम लोग, जैसा करोगे, वैसा ही भरोगे !"

जब उन लोगों ने डैनियल को शेर की माँद में फेंका, उसने कहा- "प्रभु तेरी इच्छा बनी रहे ।"

दहाड़ते हुए सारे शेर तुरन्त उसके पास आए, मगर एक शेर, जो सबसे खूँखार था, उसने अपनी ही बोली में यह कहकर सभी को रोक लिया - "रुको ! पहले मुझे उससे बात करने दो ।"

सारे शेर रुक गए ।

"क्या तुमने मुझे पहचाना ?" उसकी आँखें मानो डैनियल से बात कर रहीं थी और वह पास आकर प्यार से उसका हाथ चाटने लगा ।

"क्या तुम मुझे जानते हो ?" डैनियल अचरज में पड़ गया । "भगवान ने मुझे बचा लिया ।"

राजा डैनियल को दिल से चाहते थे, इसलिए रात भर व्रत किया और प्रार्थना करते रहे – "हे प्रभु ! उसे अन्यायियों से बचाना ।"

सूर्योदय से पहले ही राजा माँद की तरफ भागते हुए चिल्लाए' "डैनियल ! मैने भगवान से तुम्हारी रक्षा के लिए प्रार्थना की है ।"

चमत्कार जैसे, डैनियल का जवाब गूँजा – "हे राजन् ! भगवान ने आपकी प्रार्थना सुनी, और अपने देवदूतों को भेजकर शेरों का मुँह बंद कर दिया । सबसे खूँखार शेर सारी रात मेरी रखवाली करता रहा । इन्होंने मुझे ज़रा-सी चोट भी नहीं पहुँचाई है । ये मेरे दोस्त हैं ।"

'डैनियल को बाहर निकालो" राजा चिल्लाए । "धोखेबाज़ों को अन्दर डालो ।"

परन्तु डैनियल बीच में बोला – "राजन् ! इन्हें माफ कर दीजिए ! ये नादान हैं, नहीं जानते कि क्या करने जा रहे थे ।"

शर्म से नज़र झुकाकर, सभी दरबारी हाथ जोड़कर घुटनों के बल बैठकर बोले – "हम भी भगवान की पूजा करेंगे ।"

शाही फरमान निकाला गया – "मैं घोषणा करता हूँ कि मेरे राज्य में सभी भगवान की पूजा करेंगे । वही सभी का रक्षक है । स्वर्ग और धरती पर वह ही चमत्कार करता है ।"

-: प्रश्नावली :-

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखें -

1. डैनियल कौन था ?
2. डैनियल ने कैद में क्या खाना खाया ?
3. डैनियल के पास कौन-सी शक्ति थी ?
4. दरबारी डैनियल से क्यों ईर्ष्या करते थे ?
5. दरबारियों ने डैनियल को कैद करने के लिये क्या चाल चली ?
6. खूंखार शेर ने डैनियल के साथ कैसा व्यवहार किया ?

■ *क्या तुमने कभी किसी पशु की रक्षा के लिये प्रार्थना की है ? यदि हाँ, तो उस घटना को संक्षिप्त में लिखो ।*

ऐसी वाणी बोलिए, मन का आपा खोय ।
औरन को शीतल करे, आप हुँ शीतल होय ।।

बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर ।
पंथी को छाया नहीं, फल लागे अति दूर ।।

जहाँ दया वहाँ धर्म है, जहाँ लोभ वहाँ पाप ।
जहाँ क्रोध वहाँ काल है, जहाँ क्षमा वहाँ आप ।।

- संत कबीर

बच्चू की दीवाली

अपने गधे का नाम मैंने रखा है- बच्चू । वह मेरे पिताजी के गधे का बच्चा है, जो रोज़ नदी तक कपड़े के गट्ठर ढ़ोता है ।

बच्चू की त्वचा है- सुन्दर कबूतरी रंग की और उसकी आँखों के बीचों-बीच एक सुन्दर श्वेत तारे जैसा तिलक है । केले की पत्तियों के समान उसके लंबे कान हैं । वह सिर्फ साल भर का है, इसलिए मुझे उसकी पूरी देखभाल करनी पड़ती है - नहलाना, कंघी करना, खिलाना । अक्सर मैं उसके घास के बिस्तर के पास अपनी चटाई बिछाकर उसके बगल में सो जाता हूँ ।

बच्चू मुझे बहुत चाहता है और दुलत्ती नहीं मारता । दरअसल वह किसी को भी दुलत्ती नहीं मारता है, क्योंकि मैं इस बात का ध्यान रखता हूँ कि कोई भी उसे परेशान न करे । मेरे बाबा ने मुझे कई बार समझाया है कि अगर हम अपने पशुओं से प्रेम करेंगे तो वे भी अच्छी तरह रहेंगे । लेकिन अगर हम उनके साथ बुरा सलूक करेंगे, तो वे भी बुरा व्यवहार करेंगे ।

पिछली दीवाली बहुत बुरा हुआ । तब से मैं बच्चू को जहाँ भी लेकर जाता हूँ, खूब सावधान रहता हूँ ।

बड़े साहिब जिनके यहाँ मेरे बाबा कपड़े धोते हैं, उनके दो बेटे हैं । दोनों ही बच्चू के दो कान जैसे हैं । मेरा मतलब है दोनों एकदम समान हैं । शायद जुड़वाँ हैं । एक का नाम है- अजय और दूसरे का विजय । एक छोटी बहिन भी है- जया, जो मुझे बहुत अच्छी लगती है ।

दोनों भाई पहाड़ पर स्थित अपने स्कूल से घर आए हुए थे, दिवाली की छुट्टियाँ मनाने, अपने स्कूल की यूनिफॉर्म में दोनों इतने

अच्छे लग रहे थे कि मुझ पर उनका खूब रौब जमा। आखिर मेरे बाबा के हाथ की साफ-चट धुली हुई यूनिफॉर्म थी। मगर दीवाली की रात के बाद उनके अंदाज से मुझे चिढ़ होने लगी। आप खुद ही फैसला कर लीजिए कि मैं सही हूँ या नहीं।

मेरे बाबा मेरे लिए भी मिठाई, कुछ पटाखे और फूलझड़ियाँ खरीदकर लाए थे। मैने फटाफट मिठाई साफ कर दी और पटाखे भी छोड़ डाले। बाबा से कुछ और माँग की। बाबा ने उदासी से सिर हिलाया और कहा, "बस, इतने ही हैं। इससे ज्यादा नहीं ला सका क्योंकि दाम असमान को छू रहे हैं।"

मुझे बड़ी निराशा हुई, मगर हँसने की कोशिश की मानों मुझे कोई फर्क ही नहीं पड़ा। फिर मेरे बाबा ने कहा, "चल, बड़े साहिब के यहाँ चलकर पटाखे देखते हैं। दोनों छोटे साहिब भी तेरे साथ खेलेंगे।"

मैं खुशी से कूद पड़ा - "क्या मैं बच्चू को साथ ले चलूँ ?"

बाबा ने सोचकर जवाब दिया - "गधों को पटाखे अच्छे नहीं लगते। मगर मन है तो उसे भी ले चल। बस, उसे अपने पास ही रखना।"

पटाखों की रोशनी से सारा माहौल जगमगा उठा। मुझे अचरज हुआ कि किस तरह मिट्टी की छोटी पोटलियों और कागज़ से बने इन पटाखों में इतना जादू समाया हुआ है। रंग-बिरंगे तारे फौव्वारों जैसे फूट पड़े। काली रात सोने और चाँदी की रोशनी से दिन में बदल गई। हर पल पटाखे फूट रहे थे।

मगर बच्चू पटाखे की हर आवाज़ के साथ काँप रहा था। मैंने उसके गले में अपनी बाँहें डाल दी और उसे कसकर पकड़ लिया। उसके

कान डर के मारे सीधे खड़े आँखों में एक अजीब सा ख़ौफ समा गया । मगर न तो वह वहाँ से भागा और न ही रेंकने की आवाज़ की, क्योंकि उसे मुझ पर पूरा भरोसा था । जानता था कि जब तक मैं उसके पास हूँ, उसका बाल भी बाँका नहीं होगा ।

कुछ देर में शोरगुल कम हो गया । मैंने देखा कि दोनों लड़के आपस में कुछ कानाफूसी कर रहे थे, मुझे लगा कि वे मेरे बच्चू को निहार रहे थे, गर्व से मेरी छाती फूल गई । दोनों मेरे पास आए और पूछने लगे – "क्या हम थोड़ी देर के लिए बच्चू को ले जाएँ ? हम उसके साथ खेलना चाहते हैं ।"

मैंने खुशी-खुशी रस्सी उन्हें थमा दी और वे बच्चू को लेकर चल दिए । उनकी बहिन ने बच्चू को कुछ मिठाई भी खिलाई । मैं घास पर बैठकर पाँच पत्थरों वाला खेल खेलने लगा ।

अचानक मैंने पटाखों की भयंकर आवाज़ सुनी और साथ ही बच्चू के चिल्लाने की । उसकी रेंकने की ऐसी पीड़ित आवाज मैंने पहले

कभी नहीं सुनी थी । तुरंत ही जोर की हँसी भी सुनाई दी । मैं अपने पत्थर छोड़कर छत की सीढ़ियों पर दौड़ा ।

मैंने जो कुछ देखा और जो भी महसूस किया, उसके बारे में कहना मुश्किल है । बच्चू कूद रहा था और दुलत्ती मार रहा था, मानो उसे दौरा पड़ गया हो । समझ में नहीं आया कि उसे क्या हुआ । अचानक मैंने उसकी पूँछ में एक डिब्बा लटका हुआ देखा । डिब्बे में से जोर की आवाज़ें और चिंगारियाँ निकल रहीं थी। मैं अवाक् रह गया । तो उन दोनों ने यह नीच योजना बनाई थी ! मन में आया, दोनों को लात मार दूँ । मगर पहले मुझे अपने बच्चू को बचाना था ।

"बच्चू !" मैं चिल्लाते हुए उसकी तरफ बढ़ा और अपने दाँतों से डिब्बे की रस्सी को काट डाला । चिंगारी के कणों से मेरा चेहरा झुलस गया, मगर मुझे परवाह नहीं थी । मैं बच्चू के गले लगकर रोने लगा । मैं एकदम स्तब्ध था, ऐसा लगा कि गिर पड़ूँगा । मगर बच्चू ने मुझे संभाल लिया । उसने अपना सिर मेरी तरफ घुमाया मानों मुझे दिलासा दे रहा हो । शायद उसने पूरी बात समझ ली । छोटी-सी जया भी रो पड़ी, रोते-रोते वह अपने भाइयों को जोर से डाँट भी लगाती रही - "तुमने बच्चू को क्यों छेड़ा ? तुम इतने शैतान क्यों हो ?"

उसका रोना सुनकर उसके पापा, जो ताश खेल रहे थे, बाहर आ गए । उन्होंने पूछा कि क्या मामला है ? जब सारी बात सुनी, तो एकदम कठोर दिखने लगे । दोनों बेटों को बुलाकर कहा, "देखो बच्चों दिवाली खुशियों का पर्व है, सभी के लिए । दूसरों को दुःख पहुँचाकर तुम कभी खुश नहीं रह सकते हो । जानवर हमारे दोस्त हैं, तुम्हें उनका ध्यान रखना चाहिए मज़ाक की भी हद होती है ।"

फिर बड़े साहब मेरे पास आए बहुत प्यार से मुझसे बातचीत

की । मेरे जले हुए घावों पर मरहम भी किया, जया मेरे और बच्चू के लिए मिठाई लेकर आई ।

इतने में मेरे बाबा आ पहुँचे । उन्होंने मुझे गले से लगाया तो मुझे लगा कि अब सब कुछ ठीक है ।

अगले दिन जब मैं बच्चू को खिला रहा था, तब एक आवाज़ सुनी । देखा अजय और विजय फाटक के पास खड़े थे । मुझे देखकर बोले, "हम शर्मिंदा हैं । माफ कर दो," और अपना हाथ उसकी तरफ बढ़ाया । एक मेरे लिए टीन का सैनिक लाया था और दूसरा मेरे लिए गेंद और बल्ला । हम दोस्त बन गए । मैं खुशी से कह सकता हूँ कि बच्चू ने भी दोनों को माफ कर दिया और उन्हें घास खिलाने दी और अपनी पीठ भी थपथपाने दी ।

-: प्रश्नावली :-

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखें -

1. बच्चू कौन था ? उसकी विशेषताएँ क्या थी ?
2. मालिक बच्चू के साथ दिवाली मनाने कहाँ गया ?
3. बच्चू क्यों रेंका ? उसे क्या हुआ ?
4. छोटे मालिक ने अपने पालतू जानवर को कैसे बचाया ?
5. क्या लड़कों ने बच्चू के साथ सही व्यवहार किया ? उनके पिताजी ने क्या सलाह दी ?

■ *किसी पालतू जानवर के मालिक से मिलिए और पता कीजिए कि दिवाली के समय वे अपने पशु का ध्यान कैसे रखते हैं ?*

छोटी-सी बछिया

छोटी-सी बछिया उषा अपनी माँ के बगल में सटकर खड़ी हो गई । माँ का गरम मीठा दूध पीने लगी । अपने छोटे-छोटे पाँवों पर अभी भी लड़खड़ा रही थी, सिर्फ तीन दिन की ही थी, अभी तक उसे अपने पाँवों पर खड़ा होना भी नहीं आता था । माँ भी उसे प्यार से चाट रही थी, उषा को अच्छा लग रहा था, एकदम ही सुरक्षित होने का अहसास ।

"क्या तुमने खबर सुनी है ?" अपने पिछले खुर से नाक को रगड़ते हुए, भूरी गाय ने पूछा, "कल हम सभी बाज़ार में बिकने वाले हैं । रामसिंह हमें लेकर जाएगा वहाँ ।"

"हमें नहीं लेकर जाएगा" काली गाय ने बड़े विश्वास के साथ कहा । वह अपनी पूँछ से अपनी सफेद बछिया के आसपास भिनभिनाती मक्खियों को उड़ा रही थी । "मेरी बछिया इतनी दूर नहीं चल सकती । वह तो इतनी छोटी है । रामसिंह को हमें कुछ दिन बाद लेकर जाना होगा ।"

"मुझे नहीं पता, भूरी गाय अनमनी होकर बोली, "जहाँ तक मैंने देखा है, रामसिंह को ऐसी बातों की कोई परवाह नहीं हैं ।" उसने उदासी से अपना सिर हिलाया और घास चरने में लग गई ।

वाकई में, भूरी गाय की जानकारी सही थी, और अगले दिन सबेरे ही सारी गायों को बाज़ार ले जाने की तैयारी शुरु हो गई । काली गाय के थनों पर एक छोटी-सी झोली लटका दी गई । बेचारी उषा ! उसने पाया कि अब वह अपनी माँ के थनों तक पहुँच नहीं सकती ।

"ऐसा क्यों किया है ?" उसने माँ से पूछा, उसे बहुत प्यास लग रही थी, "अब अपने नाश्ते तक नहीं पहुँच सकती ।"

"हमेशा ऐसा ही करते हैं," काली गाय ने उदासी से कहा, "ताकि तुम्हें दूध नहीं मिले मगर उन्हें मिल जाए ।"

कुछ ही मिनटों में रामसिंह अपना डंडा लेकर आया, और सारी गायों के साथ-साथ काली गाय और उसकी बछिया भी बाज़ार की ओर खदेड़ दी गई ।

सड़क लंबी और धूल से भरी हुई थी और तेज़ धूप में अपनी माँ के बगल में चलती हुई नन्हीं उषा की प्यास बढ़ती गई । दो-तीन बार तो वह गिरते-गिरते बची; मगर रामसिंह की एक लात से ही वह हाँफते-हाँफते अपनी माँ के पीछे हो लेती । उसके छोटे-छोटे पाँव दुखने लगे और उसका सिर चकराने लगा । मगर रामसिंह पीछे से डंडी से टोंचता रहा और डर के मारे वह अपनी माँ के साथ चलती रही ।

अंत में वे सभी बाज़ार पहुँच गए । बहुत सारी अजनबी गायों के साथ धक्के खाते हुए छोटी-सी बछिया ने अपनी माँ के साथ खुद को एक छोटे से बाड़े में पाया । निढ़ाल होकर उषा घास पर गिर पड़ी, और उसकी माँ बड़े प्यार के साथ अपनी जीभ से उसके चेहरे और थके हुए शरीर को चाटने लगी ।

"मगर मुझे यह बछ़िया नहीं चाहिए", किसान कह रहा था । "यह तो सिर्फ दूध पीती रहेगी । एकदम मरियल लग रही है, और गाय को देखकर भी नहीं लग रहा है कि वह इतना दूध दे सकेगी ।"

बस, उषा दहशत से देखती रही कि उसकी माँ को एक रस्सी से घसीटते हुए उससे दूर ले गए । उसने पीछा करने की पूरी कोशिश की, मगर उसे धकेल दिया गया । माँ ने भी बहुत कोशिश की और रस्सी से बने फंदे से अपना सिर भी लगभग बाहर निकाल ही लिया, ताकि वह अपनी बछिया के साथ रह सके, मगर वे लोग लात और घूंसे मारते हुए घसीटकर ले गए । वह बिलबिलाती-रंभाती रह गई ।

उसके जाने के बाद, बाज़ार में किसी ने भी उषा की तरफ ज्यादा ध्यान नहीं दिया, अब वह मुक्त थी इधर-घूमने के लिए । कूदते

हुए उषा भी फाटक पार करके उसी दिशा में चल पड़ी जिधर उसकी माँ गई थी। तभी एक भूरा और सफेद बछड़ा जो विपरीत दिशा से आ रहा था, उससे टकराया।

"देखकर नहीं चल सकती हो क्या?" बछड़े ने डाँट लगाई। "इतनी भी क्या जल्दी है ?"

"मैं अपनी माँ को ढूंढ रही हूँ" उषा ने हडबड़ाते हुए कहा। "वह एक सुन्दर-सी काली गाय है। क्या तुमने उसे देखा है ? वह जरूर इसी रास्ते से गई थी। उसे रस्सी से खींचते हुए ले जा रहे थे क्योंकि वह जाना नहीं चाहती थी।"

"ओह !" बछड़े ने सोचते हुए कहा, "शायद यह वही गाय थी जिसे मैंने प्रकाश के खेत की तरफ ले जाते हुए देखा था।" और फिर, बछिया के चेहरे पर आशा की झलक देखकर उसने तुरन्त कहा, "मगर वहाँ जाने से कुछ फायदा नहीं। वे तुम्हें अपनी माँ के पास फटकने भी नहीं देंगे।"

"तब मैं किस तरह जीऊँगी ?" उषा रोने लगी, वह बहुत ज्यादा प्यासी हो चुकी थी।

"तुम्हें भी शायद वही करना पड़ेगा जैसा हम सभी करते है," बछड़े ने कहा, "और घास खानी पड़ेगी।"

"घास?" उषा ने हैरत से कहा। "दूध की जगह घास ! मगर कैसे ?"

"इस तरह," बछड़े ने झाड़ियों में से घास का एक बड़ा ग्रास अपने मुँह में लिया धीरे-धीरे चबाते हुए कहा। "जल्दी ही तुम्हें आदत पड़ जाएगी। वैसे इतनी बुरी भी नहीं है। लो, इसे चबाने की कोशिश करो।"

"ओह ! मुझसे नहीं होगा," उषा ने घास चबाने की कोशिश करते हुए लाचारी से कहा। मगर घास दाँतों में अटक गई और उसकी

जीभ भी कट गई । उसने पच् से थूक दिया ।

"शायद मैं घास खाने के लिए बहुत छोटी हूँ" उसने रोनी सूरत के साथ कहा ।

"हाँ, शायद," बछड़े ने ज़रा सोचकर हामी भरी । "चलो, मैं तुम्हे प्रकाश के खेत तक ले चलता हूँ । हो सकता है तुम्हें वहाँ अपनी माँ मिल जाए, कौन जाने ?"

"आह ! शुक्रिया !" उषा ने अहसान जताया और बछड़े के साथ चल पड़ी, अपने पाँवों के दर्द के बावजूद ।

खेत तक पहुँचते-पहुँचते उषा थक्कर चूर हो गई । सावधानी से बछड़ा उषा को पीछे तक ले गया और वहाँ बाड़ में एक छेद दिखाया ।

"अब दूध दुहने तक इंतजार करो," उसने चेतावनी दी, "और उस समय अगर तुम जल्दी में अंदर घुस जाओगी, तो शायद तुम्हें मौका मिल जाए । तब कुछ देर के लिए तुम्हारी माँ के थनों से थैली हटाई जाएगी, अगर मिल सको तो शायद थोड़ा-सा दूध पी पाओगी ।"

यह कहकर वह बछड़ा उषा को बाड़ की छाँव में छोड़कर वहाँ से चल पड़ा ।

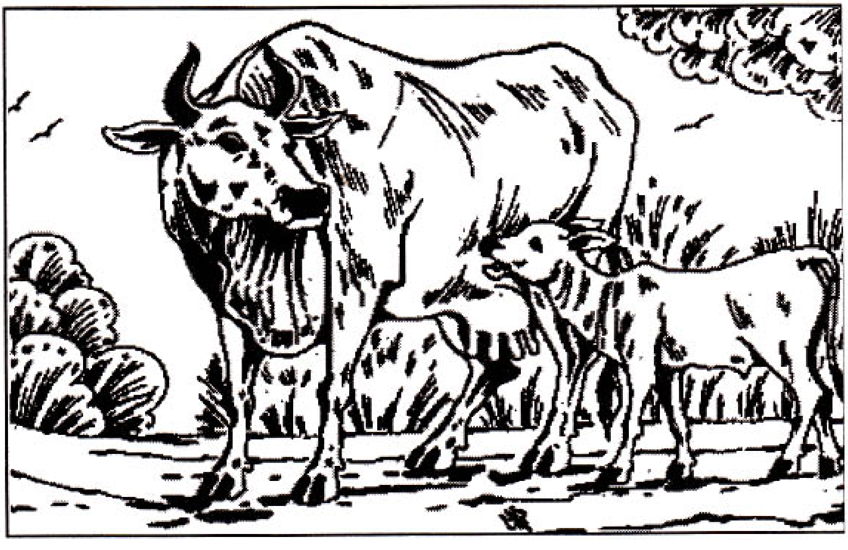

थकान के मारे बछिया को नींद आ गई । जब वह उठी, तब सूरज पश्चिम की तरफ था । भूख से उसका पेट बिलबिलाने लगा । अकेली और भूखी, वह रोते हुए रँभाने लगी । दूर से उसके जवाब में एक और रँभाने की आवाज़ सुनाई पड़ी । आश्चर्य ! यह तो उसकी माँ की आवाज़ थी । बिना कुछ और सोचे, वह बाड़ के बीच में घुसी और आवाज़ की दिशा में बढ़ चली । दौड़ते हुए वह बार-बार पुकारती रही, हर बार माँ की आवाज़ का जवाब मिला !

और अचानक, उसने अपनी माँ को देखा, एक पेड़ से बँधे हुए और रस्सी को अपनी बछिया की दिशा में खींचते हुए । सामने ही किसान खड़ा था, अपनी बेटी के साथ जिसे वह अपनी नई खरीददारी दिखाने लाया था । बच्ची ने उषा को देखा ।

"ओह बाबा !" वह चिल्लाई, "देखो, छोटी सफेद बछिया ! क्या मैं इसे रख लूँ ? आपने हमेशा कहा है कि मैं एक बछिया रख सकती हूँ ।"

"सफेद बछिया ? मेरे पास कोई सफेद बछिया नहीं है," उसका पिता कहने ही लगा कि उषा कूदकर अपनी माँ के पास पहुँच गई । अगले ही क्षण, माँ उसे प्यार से चाटने लगी ।

"ओह बाबा ! देखो, उसने अपनी माँ को ढूँढ लिया !" बच्ची फिर से चिल्लाई । देखो ना, दोनों साथ-साथ कितने खुश हैं ।" किसान ने ऐसे देखा जैसे उसे अपनी आँखों पर विश्वास ही नहीं हो रहा था ।

"बाबा, बताइए ना, मैं इसे रख लूँ" बच्ची ने फिर से आग्रह किया । "मैं इसे अपने पास रखना चाहती हूँ रख लूँ ना ?" किसान कठोर स्वभाव का था, मगर अपनी बच्ची के सामने मोम हो गया ।

"ठीक है, अगर तुम सचमुच रखना चाहती हो, तो शायद रख सकती हो ।"

"ओह बाबा, शुक्रिया !" बच्ची ने कहा, और जल्दी से बोली, "तो क्या मेरी बछिया अपना भोजन कर सकती है ? बोलिए ?"

"हा, शायद", किसान का मन तो नहीं था, फिर भी उसने हामी भरी, और गाय के थनों से थैली हटाने का आदेश दिया ।

"शुक्रिया बाबा ! शुक्रिया !!" बच्ची बोली ।

और जैसे ही थकी बछिया के प्यासे मुँह में गरम दूध की धार बही, उसका भी कहने का मन हुआ- "शुक्रिया ! शुक्रिया !!"

-: प्रश्नावली :-

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखें -

1. रामसिंह गायों को कहाँ ले जा रहा था ?
2. उषा को नाश्ता क्यों नहीं मिला ?
3. किसान ने बछिया को गाय के साथ ले जाने से क्यों इन्कार किया ?
4. उषा माँ के पास कैसे पहुँची ?
5. क्या बछिया को माँ से अलग करना उचित था ?

■ *उषा को माँ के साथ रखने के लिए किसान को एक धन्यवाद पत्र लिखिए ।*

वफादार बॉबी

आज से पचास साल पहले स्काट्लैंड में एक गरीब बूढ़ा गडरिया रहता था। उसका एक वफादार कुत्ता था - बॉबी।

एक दिन गड़रिया मर गया और उसे एडिनबर्घ के एक कब्रिस्तान में दफना दिया गया। कुत्ता मालिक की कब्र की रखवाली करता रहा और उस जगह से हिला तक नहीं। गिरिजाघर की ज़मीन पर कुत्तों का जाना नियमों के खिलाफ था। इसलिए जब भी चौकीदार कुत्ते को वहाँ देखता, उसे भगा देता। परन्तु कुत्ता हर बार लौट आता।

सर्दी की एक सुबह, चौकीदार ने कुत्ते को ठण्ड से ठिठुरते देखा। उसे दया आ गई, कुत्ते को भगाने का मन नहीं किया, बल्कि उसे कुछ खाने को भी दे दिया। उस दिन से कुत्ते ने गिरिजाघर की ज़मीन को अपना घर बना लिया, पूरे बारह साल के लिए।

बॉबी की वफादारी ने आसपास के लोगों का दिल जीत लिया।

रोज़ दोपहर के बारह बजे, बन्दूक की आवाज़ सुनकर बॉबी गिरिजाघर के पास एक होटल में जाता, और वहाँ का मालिक प्यार से खाना खिलाता, क्योंकि वह भी बॉबी की वफादारी का कायल था ।

एक बार बॉबी मारा जाने वाला था, क्योंकि उसका कर जमा नहीं किया गया था । जैसे ही आस-पड़ोस के बच्चों को इस बात का पता चला, उन्होंने अपने आप ही पैसा इकट्ठा करके कर-अधिकारी को दे दिये । एडिनबर्घ के न्यायाधीश के मन में बच्चों की यह बात इतनी छू गई कि उन्होंने बॉबी का कर माफ कर दिया ।

गिरिजाघर आने वाले कई लोगों ने बॉबी से दोस्ती करनी चाही, मगर वह कब्र की रखवाली से कभी नहीं हटा । बारह साल अपने मालिक की कब्र की रखवाली करने के बाद एक दिन उसकी मृत्यु हो गई । एक दयालु महिला ने उसकी याद में वहाँ एक स्मारक बना दिया ।

बच्चों, इस कुत्ते की वफादारी के बारे में तुम क्या कहोगे ?

-: प्रश्नावली :-

निम्नांकित वाक्य सही हैं या गलत, निशान लगाएं -

1. बॉबी एक प्यारा कुत्ता नहीं था ।
2. कुत्ते का कर नहीं लिया गया ।
3. कुत्ते ने बीस साल तक मालिक की कब्र की रखवाली की ।
4. कुत्ता वफादार था ।

■ *तुमने कभी चाय की दुकान के पास कुत्तों को टकटकी लगाते देखा है? तुम्हारे विचार में वे ऐसा क्यों करते हैं ?*

प्राण-रक्षा

मार्च महीने की एक सुहावनी सुबह के समय हाथियों का युवराज गज, जंगल की एक पगडंडी पर मस्ती से घूम रहा था ।

बसंत का मौसम शुरु हुआ ही था । स्वच्छ हवा बह रही थी । कोने-कोने से फूल झाँक रहे थे । तितलियाँ यहाँ और वहाँ से यहाँ मंडरा रही थी । रंग-बिरंगी खुशी से चह-चहा रही थीं ।

गज को बहुत अच्छा लग रहा था । ऐसे खुशी के पल में कोई साथी हो तो कितना मज़ा आता ? मगर उसके सभी साथी दूसरे रास्ते से जंगल के तालाब में नहाने चले गए थे, अतः गज बिल्कुल अकेला था ।

जैसे ही वह अपनी सूँड को लहराते हुए आगे बढ़ा, उसे एक तीखी आवाज़ सुनाई पड़ी । वह मुड़ा और उसकी नज़र एक चूहे के बिल से झाँकती हुई दो चमकती आँखों और गलमुच्छों पर पड़ी ।

गज ने कहा - "हेलो चूहे ! क्या तुमने मुझे गुडमार्निंग कहा ? शुक्रिया ! इस गंदे बिल में छुपने की बजाय तुम मेरे साथ घूमने क्यों नहीं चलते ?"

"तुम्हारे साथ ? अच्छा मज़ाक है !" चूहे ने चूँ-चूँ की । "मैं एक बौना-नाटा प्राणी हूँ और तुम हो भीमकाय शरीर वाले । मेरी तुम्हारी कैसी जोड़ी ? जो भी देखेगा, हम पर हँसेगा ।"

"डील-डौल से क्या वास्ता ? गज ने उत्तर दिया । "तुममें और मुझमें बहुत-सी समानताएँ हैं ।"

"वह किस तरह ?" चूहे ने हैरत से पूछा ।

गज ने कहा - "सबसे पहली बात कि मैं जन्म से शाकाहारी हूँ,

तुम भी शाकाहारी हो । दूसरी बात यह कि हमारे शरीर का रंग एक जैसा है, सुन्दर सलेटी रंग । तुम भगवान गणेश के भक्त और वाहन हो, और मेरा सिर भगवान गणेश की अनुकृति है । दरअसल दोनों जुडवाँ कहे जा सकते हैं । अतः चलो मेरे साथ ।''

चूहा इतने भव्य व्यक्तित्व के साथ अपना संबंध जुड़ जाने से अति प्रसन्न हुआ । वह अपने बिल से कूदकर बाहर आ गया, और एक तान गुन-गुनाने लगा ।

अचानक उन्होंने एक रुदन सुना - ''राक्षस, संभालो अपना कदम ! मुझे मत रोंदो !''

गज ने नीचे देखा तो एक रोएँदार पूँछ नज़र आई ।

''अरे तुम हो, बदतमीज जानवर ! बीच रास्ते में खड़े हो । अरे बाबा, डरो मत । मैं तुम्हें नुकसान नहीं पहुँचाऊँगा । तुम भी हमारे साथ घूमने क्यों नहीं चलते ? खूब मज़ा जाएगा ।''

खरगोश ने जोरदार ठहाका लगाते हुए कहा - ''हा-हा-हा ! कैसी अनोखी जोड़ी तीनों की ! जैसे विश्व की त्रिमूर्ति ! देवता भी हमसे ईर्ष्या करेंगे । हा-हा-हा !''

''चुप हो जाओ'' गज चिंघाड़ा । खरगोश भय से काँपने लगा । गज उसे उठाकर हवा में उछालने वाला ही था कि खरगोश ने माफी माँगी, ''क्षमा करो युवराज ! मैं तुम्हारे साथ चलने में अपना मान समझूँगा ।''

ऐसा कह वह भी उनके साथ चल पड़ा और उन्होंने अपनी सैर जारी रखी । जैसे ही उन्होंने एक खुला मैदान पार किया कि गज की नाक में सुरसुरी होने लगी । वह छींकने लगा । तभी उसने रस्सी का एक सिरा अपने कान के पास महसूस किया । वह उसे पकड़कर खींचने लगा ।

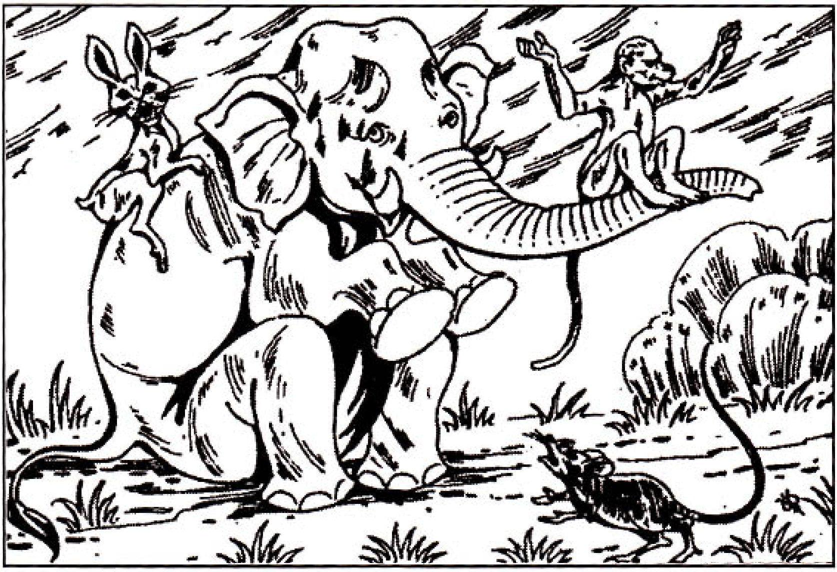

"तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई ? मेरी पूँछ छोड़ो, वरना मैं तुम्हारे दोनों कान काट डालूँगा", आगे की ओर झुकी हुई एक डाल पर बैठा बन्दर चीखा, जो उस पूँछ का मालिक था ।

गज ने तुरन्त ही पूँछ को छोड़ दिया और माफी माँगी – "सॉरी, सॉरी, मुझे पता नहीं था कि यह आपकी पूँछ है । हे मानव के हमशक्ल ! माफ करो और भूल जाओ ।"

बन्दर ने डाँटते हुए कहा – "गाली मत दो । मुझे मानव की हमशक्ल वाला कहकर मेरा अपमान मत करो । मुझे उस जाति से घृणा है । वे अपने लाभ के लिए हमें तकलीफ पहुँचाते हैं ।"

"ठीक है । ठीक है । अब माफ कर दो," गज ने पुनः क्षमा माँगते हुए कहा । "मैंने तो सुना है कि तुम्हारी जाति ही उनकी पूर्वज है ।"

"बकवास ! ऐसी बेवकूफी की बातें वे ही करते हैं, हमें उनसे कोई लेना देना नहीं है । हम तो महान् वीर भगवान हनुमान के वंशज हैं ।"

“अपनी बहस बंद करो,” चूहे ने मिन्नत की । “तुम भी हमारे साथ घूमने क्यों नहीं चलते ?”

खरगोश और गज ने भी बन्दर को बहलाते हुए कहा - “हाँ, हाँ, हमारे साथ आ जाओ ।”

“मेरे दुबले पतले पैर तुम्हारे भारी खंभों के साथ-साथ कैसे चल पाएँगे ?” बन्दर ने गज से कहा ।

अब गज ने कहा - “चलो, मुझ पर सवार हो जाओ । मुझे अपनी गलती का पश्चाताप करने दो ।”

बन्दर कूदकर गज की पीठ पर आ बैठा और चारों दोस्त सैर का आनंद लेने लगे ।

जैसे ही वे आगे बढ़ते गए, उन्होंने सड़क के किनारे एक झाड़ी को देखा जिसकी पत्तियाँ अद्भुत ढंग से हिल रही थीं । हैरत से वे सोच ही रहे थे कि झाड़ी इस तरह क्यों हिल रही है कि चूहा इस तरह फुस-फुसाया कि सभी सुन सकें, “सावधान ! सावधान ! वह वहाँ छुपा हुआ है, चोर की तरह ! उस पर विश्वास मत करो । वह खतरनाक है ।”

“क्या ? वह छोटा-सा जन्तु, जो मेरे एक के बराबर भी नहीं है,” गज ने खिल्ली उड़ाई ।

“बिच्छु है !” खरगोश बोला ।

“शैतान है !” बन्दर बोला ।

“वह तुम्हारे पैरों में जंजीर डालकर तुम्हारे सुन्दर दाँतों को तोड़

देगा। फिर बंदी बनाकर सर्कस में बेच देगा।" तीनों ने एक ही गूँज के साथ गज से कहा। परन्तु गज ने कोई ध्यान नहीं दिया।

इसी बीच एक आदमी आए एक हाथ में केलों का गुच्छा और गन्ने की गठरी और दूसरे में गुड़ की ढेलियाँ लिए हुए। बन्दर, खरगोश और चूहा एक तरफ तेज़ी से छुप गए और अपने बहके हुए दोस्त को उस आदमी के पास जाते हुए देखने लगे। गज ने केले और गन्ने बड़े चाव से खाए, फिर गुड़ की डली भी जल्दी से खाने लगा। जैसे ही उसने डली को निगला, वह इस तरह गिर पड़ा मानो बिजली का झटका लगा हो। वह बेहोश हो गया। आदमी खुशी से चिल्लाने लगा, "मैंने उसे पकड़ लिया है। साथियों ! आओ, ट्रक लाओ और मदद करो।"

उसके चार साथी जो छुपे हुए थे, कूदते और चिल्लाते हुए तीर के समान आगे बढ़े। उन्होंने गज की टांगों को लोहे की जंजीर से जकड़ दिया, और उसे ट्रक में लादकर चल पड़े।

"हाय, हाय !" चूहा रो पड़ा "मैंने अपना प्रिय दोस्त खो दिया।"

"मैंने भी," खरगोश रोनी आवाज़ में बोला।

"मैंने भी," बन्दर ने भी सिसककर कहा।

"हिस्स्स !" फुँफकारता हुआ एक साँप बोला, जो सारा नजारा देख रहा था। "यह रोना-धोना किसी काम का नहीं। अगर तुम सच्चे दोस्त हो, तो उसके बचाव का कोई रास्ता निकालो।" इतना कहकर साँप वहाँ से चला गया।

तीनों दोस्तों ने झटपट आपस में सलाह की। बंदर सबसे फुर्तीला था, इसलिए उसे ट्रक का पीछा करने का काम सौंपा गया। एक डाल से दूसरे डाल तक फाँदते हुए उसे पता लगाना था कि वे गज को ले

जाकर क्या करते हैं ताकि उसके सारे दोस्त मिलकर उसे किसी तरह छुड़ा लें ।

उधर ट्रकवाले आदमी शराब पीने लगे । बेहोश गज के चारों ओर गाने और झूमने लगे । जल्दी ही उनके बीच में झगड़ा होने लगा ।

पहला आदमी बोला - "मैं इसके दाँत लूँगा, क्योंकि मैंने ही सबसे पहले इसे देखा था ।"

"मगर मैंने ही इसे पकड़ा था," दूसरा आदमी जोर से बोला ।

"मगर ट्रक को मैं लेकर आया," तीसरा चीखने लगा ।

चौथे ने कहा - "चलो, इसे सर्कस में बेचकर पैसा आपस में बाँट लेगे ।"

आखिर में ट्रक जंगल की एक पशुशाला तक पहुँच गया । गज को घसीटकर बाहर निकाला गया । उन्होंने गज के चारों ओर बड़े-बड़े लट्ठे गाड़कर एक पिंजरा-सा बना दिया । उसके बाद वे लोग खा-पीकर खुशी से चिल्लाने लगे । एक ने कहा, "स्वयं शैतान भी अब उसको हमसे नहीं बचा पायेगा ।" आधी रात होते-होते सभी सो गए ।

इस बीच बन्दर शीघ्रता से वापिस गया और उसने सारी बात खरगोश एवं चूहे को सुनाई । सभी डर गए ।

"आखिर उन लोगों ने हमारे प्रिय दोस्त को जँजीरों से बाँधकर पिंजरे में कैद कर दिया है, शैतान कहीं के !"

बन्दर ने कहा- "यदि उन्होंने उसे सर्कस में बेच दिया, तो वहाँ बेकार के खेल और चमत्कार दिखाने के लिए उसे खूब सताया जाएगा । उसे भूखा रखेंगे और बहुत मारेंगे । इससे तो मौत ही बेहतर होगी ।"

खरगोश बोला - "हम उसे कैसे बचायें ? उन लोगों के जगने के

पहले ही हमें कुछ करना चाहिये । लोहे की जँजीरों को काटकर लकड़ी के लट्ठों को तोड़ना पड़ेगा ।"

"जँजीर काटने के लिए लोहे की आरी चाहिए । परन्तु बन्दर, क्या तुम आरी का प्रयोग करना जानते हो ? हाथ तो केवल तुम्हारे पास ही हैं ।"

"शायद कर सकूँगा, मैंने एक लुहार को ऐसा करते हुए देखा है ।"

ऐसा कहकर वह आरी लेने भागा । खरगोश ने आगे पूछा, "चूहे, क्या तुम पिंजरे के लकड़ी के लट्ठों को अपने दाँतों से कुतर सकोगे ?"

"मेरे परिवार और दोस्तों की संख्या काफी बड़ी है, एक सेना जितनी । हम जो भी कर सकेंगे, जरूर करेंगे ।" चूहे ने कहा । "लेकिन हम गज को बेहोशी की हालत से कैसे निकालें ?"

"यह काम मुझ पर छोड़ दो", खरगोश ने कहा । "मुझे एक जंगली बूटी का पता है जिसके रस से एक पहाड़ को भी जगाया जा सकता है । मैं भागकर तुरन्त ले आता हूँ ।"

तीनों दोस्त अपने-अपने काम में लग गए । सभी आदमी अभी तक खर्राटे भरकर शराब के नशे में सो रहे थे । बन्दर चुपचाप पिंजरे में घुस गया और अपने भाईयों के साथ बारी-बारी से जंजीर काटने में जुट गया । चूहों की सेना लकड़ियों के लट्ठों को तेज़ी से कुतरने लगी । खरगोश जड़ी-बूटी से रस निकालने में लग गया । रात भर वे काम करते रहे ।

जब बन्दर के हाथ जंजीर काटने हुए थकने लगते तो उसके भाई बारी-बारी से लग जाते, पौ फटने के पहले ही सारी जंजीरें कट गई, एक को छोड़कर । सभी लकड़ियों के लट्ठे कुतर दिए गए । खरगोश ने पत्तियों के दोने में रस भरकर तैयार रखा था ।

चूहे ने सचेत किया - "जल्दी करो, पौ फटने वाली है और हमारी सारी मेहनत बेकार हो जाएगी ।"

खरगोश तेज़ी से गज के पास गया और पूरे रस को उसके कानों मे उँड़ेल दिया ।

बन्दर जोर से चीखा - "इसने बहुत जल्दी मचा दी । अभी तो एक जंजीर बाकी है ।"

गज उठा, किसी पहाड़ की तरह । उसके अचानक उठने से आधी कटी हुई जंजीर टूट गई । घुमड़ते मेघ की तरह वह चिंघाड़ा और अपनी सूँड लहराने लगा ।

"वाह गज, वाह ! अच्छा किया ! अब भागो ! वे लोग तुम्हारे पीछे पड़े हैं । तुम आजाद हो गए हो, मगर भागो," तीनों दोस्त जोर से चिल्लाए और खुद भी छिप गए ।

इस बीच गज की चिंघाड़ सुनकर चारों आदमी जग गए और चिल्लाते हुए पिंजरे की तरफ भागे, "भाग गया बदमाश ! उसने जंजीरें और लकड़ी के लट्ठों की भी तोड़ दिया । जल्दी से ट्रक लाओ ! हम उसका पीछा करके उसे फिर से पकड़ लेंगे ।"

कोसते और चिल्लाते हुए वे ट्रक की तरफ भागे, परन्तु चतुर चूहा, जो मनुष्यों के तौर तरीके जानता था, पहले ही ट्रक के इंजन में घुसकर सारे तार काट चुका था ।

चारों आदमी ने ट्रक को धकेलने की बहुत कोशिश की, मगर कुछ न कर सके । इंजन शुरू हुआ ही नहीं ।

गज घने जंगल की ओर भाग गया, अपने तीनों साथियों को अपनी पीठ पर बैठाकर । सारे जानवर खुशी से नाच उठे ।

उन तीनों दुष्टों को वन रक्षकों ने पकड़ लिया और बिना आज्ञा शिकार करने के लिए दंडित किया ।

-: प्रश्नावली :-

समझकर वाक्य पूरे करो -

1. भगवान गणेश का वाहन - - - - - - - - - - है ।
2. बिना आज्ञा शिकार करना, - - - - - - - कहलाता है ।
3. बंदर ने अपने आपको वीर - - - - - -- का वंशज बताया ।
4. आदमी अपना स्वार्थ पूरा करने के लिए - - - - - - - को पकड़ते हैं ।
5. भगवान गणेश का मुख - - - - - -- - के मुख के समान है ।

- *सड़क पर दुर्घटनाग्रस्त व्यक्ति पड़ा है, भीड़ जमा है । ऐसे में लोगों की प्रतिक्रिया अपने शब्दों में लिखो ।*

ऋषि की करुणा

तिरूवन्नामलई के महान् ऋषि भगवान रमण, जिनकी मृत्यु ईस्वी सन् 1950 में हुई, पशु-पक्षियों के प्रति बहुत ही दयालु और करुणामय थे ।

उनका सेवक, माधवस्वामी दो पेड़ों के बीच बंधे बाँस पर उनका तौलिया सुखा देता था । उस बाँस के एक कोने पर एक चिड़िया ने अपना घोंसला बना लिया ।

एक दिन तौलिया उठाते समय, भगवान के हाथों से घोंसला सरक गया और ज़मीन पर जा गिरा । घोंसले में रखे तीन अण्डों में से एक अण्डा लुढ़क कर चटक गया मगर टूटा नहीं ।

यह देखकर भगवान व्यथित हो उठे । उन्होंने अपने सेवक से कहा कि यह तो बहुत भयंकर पाप हो गया है । करुणा और पश्चाताप से वे अण्डे की तरफ देखते रहे ।

"बेचारी माँ तो यह सोचेगी कि अण्डा टूट गया है । कितनी रोएगी वह ! और अवश्य ही अण्डा तोड़ने के लिए मुझे पाप देगी । क्या हम

अण्डे को ठीक करके बच्चे को जन्म देने लायक बना सकते हैं ?" उन्होंने पूछा ।

भगवान ने चटके हुए अण्डे को एक कपड़े में लपेटा और घोंसले में वापस रख दिया । कुछ-कुछ घंटों बाद वह अण्डे को अपने हाथों से सहलाते, उसे देखते रहते और कपड़े में लपेटकर वापस रख देते । अपने आप से पूछते रहते - "क्या यह अण्डा ठीक हो जायेगा ? क्या इसमें से बच्चा निकलेगा ?" खूब करुणा और दया से उन्होंने एक हफ्ते तक अण्डे की देखभाल की ।

आठवें दिन भगवान एक बच्चे की तरह चहक उठे- "लगता है अण्डा ठीक हो गया है। इसकी माँ कितनी खुश होगी ! ईश्वर ने मुझे पाप से बचा लिया । अब देखना होगा कि इसमें से बच्चा कब बाहर निकलेगा ?"

उन्होंने लगातार अण्डे पर नज़र रखी । एक दिन बच्चा बाहर निकल आया । भगवान ने प्रसन्न होकर बहुत प्यार से उसे अपने हाथों में उठाया । उन्होंने सभी को दिखाया और उसे उसकी माँ को लौटा दिया ।

पाठ बोध

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखें -

1. टूटे हुए अण्डे को देखकर रमण महर्षि की क्या प्रतिक्रिया थी, और उन्हें कैसा लगा ?
2. आठवें दिन भगवान को किस बात से आश्चर्य हुआ ?
3. यह कहानी पढ़कर तुम्हें क्या शिक्षा मिली ?

क्रूर खेल

कभी-कभी एक ही घटना से व्यक्ति का मन-परिवर्तन हो जाता है । अपने स्कूल के दिनों में मैंने एक शिकारी के एक ऐसे अनुभव के बारे में सुना, जिससे उस इलाके के लोगों को शिकार नामक खेल से ही नफरत हो गई ।

सन् 1940 में एक शिकारी अपने साथियों के साथ जंगल में शिकार खेलने गया । जंगल गाँव ज्यादा दूर नहीं था । वे जंगल में घंटों घूमते रहे, मगर उन्हें शिकार के लिए एक भी जानवर नहीं मिला । निराश हो रहे थे कि सूर्यास्त के कुछ मिनट पहले शिकारी ने एक सांभर को देखा । वह बड़ी सजगता से शिकारी की तरफ ही देख रही थी ।

उसने अपने साथियों से चुपचाप बैठने को कहा और खुद बन्दूक उठाकर जानवर की तरफ जाने लगा । मगर वह मादा जानवर उसे देखते हुए भी अपनी जगह से नहीं हिली । शिकारी को इस बात पर बहुत आश्चर्य हुआ । वह सजगता से आगे बढ़ता गया । सांभर अब भी नहीं भागी । बस, कुछ कदम आगे बढ़ी मानो वह अपने इलाके की रक्षा के लिए तैयार थीं ।

आमतौर पर ऐसे जानवर इन्सानों को देखकर जल्दी से भाग जाते हैं । मगर यह सांभर उसका सामना इतनी बहादुरी से क्यों कर रही थी ? वह सोचने लगा । मगर तुरन्त ही उसने इन विचारों को ताक पर रखा क्योंकि शाम ढल रही थी और वह इस शिकार का अवसर खोना नहीं चाहता था ।

उसने सांभर की तरफ बन्दूक करते हुए घोड़ा दबाया । गोली के शोर ने पल भर के लिए जंगल की शांति भंग कर दी ।

गोली के दबाव से जानवर पीछे की और कूदी और झाड़ियों में

गायब हो गयी । शिकारी का निशाना पक्का था, इसलिए वह अपने शिकार के पीछे भागा । ज़मीन और झाड़ियों पर उसे खून के धब्बे नज़र आए । धब्बों के सहारे अपने साथी के साथ वह आगे बढ़ता गया ।

"अरे, देखो, वहाँ पड़ा है !" जानवर को कुछ दूर पर तड़पते देखकर वह चिल्लाया ।

वह उत्सुकता से आगे बढ़ने लगा, मगर अचानक रुक गया और बन्दूक गिराकर अपना सिर इस तरह पकड़ लिया मानो कोई भयंकर अपराध कर दिया हो ।

"क्या हुआ साहब ?" उसके सहायकों ने परेशानी से पूछा । "खुद ही देख लो !" उसने मार्मिक स्वर में कहा ।

मर्मस्पर्शी दृश्य था । सांभर अपने बच्चे को, जो शायद कुछ ही दिनों का था, दूध पिला रही थी । मौत के इन क्षणों में भी वह बड़ी मुश्किल से अपने बच्चे को प्यार से चाटने की कोशिश कर रही थी ।

उसके शरीर पर लगी गोली से चारों तरफ खून बहने लगा । अंत मे उस बहादुर माँ ने आँखें मूँद ली ।

बच्चा सारी बात से बेखबर अपनी माँ का दूध पीने की कोशिश कर रहा था । दुखी शिकारी समझ गया कि जानवर ने उसे आगे बढ़ने से क्यों रोका था । अपने बच्चे की रक्षा करने । गोली लगने के बावजूद वह साहसी माँ अंतिम क्षण तक अपने बच्चों को दूध पिलाने की कोशिश करती रही ।

शिकारी ने दुखी होकर कहा – "मैंने जितने जानवरों और पक्षियों को मारा है, उन सबके पीछे उनके बच्चे रहे होंगे । माँ के बिना वे बच्चे कैसे जीए होंगे ? आज इस घटना ने मेरी आँखें खोल दी है । सच में, शिकार कितना क्रूर खेल है ।"

बच्चों ! कहने की ज़रूरत नहीं कि उसने शिकार खेलना छोड़ दिया ।

-: प्रश्नावली :-

निम्नलिखित प्रश्नों को उत्तर लिखें –

1. शिकारी घायल सांभर को देखकर दुखी क्यों हुआ ?
2. सांभर ने अपने शरीर पर गोली लगने के बावजूद क्या किया ?
3. शिकारी को देखकर खतरा जानने के बावजूद सांभर क्यों नहीं हिली ?
4. इस घटना ने शिकारी के जीवन को कैसे बदला ?

- *'माँ की ममता' संबंधी कहानियों/घटनाओं का संकलन करो । अपनी माँ से इस विषय में बात करो । इसके बारे में कुछ पंक्तियाँ लिखो ।*

तीन दोस्त

एक सूखा हुआ पेड़, जिस पर केवल एक बड़ा, हरा पत्ता था, रास्ते में अकेला खड़ा था। बाकी के पत्ते और फूल उसका साथ छोड़ चुके थे। मगर इस पत्ते ने उसका साथ नहीं छोड़ा। शायद वफादारी के अहसास से जुड़ा हुआ था। गर्मी की कड़कती धूप में इस पत्ते ने धूल से भरे रास्ते पर एक शीतल छाँव फैला दी।

रास्ते से गुजर रही एक छिपकली ने इस छाया में शरण ली। वह प्यास से बेहाल थी। पत्ते को उस पर दया आई और उसने ओस की कुछ बूँदें उसकी जीभ पर टपका दी। छिपकली ने अहसान से उन्हें चाटा और आँखें बंद करके सोने लगी।

अचानक कुछ तेज़ आवाज़ से वह जाग उठी। उसने दो लड़कों को आते देखा। एक के पास डंडा था और दूसरे के पास गुलेल। छिपकली डर के मारे काँपने लगी। वह ऐसे लड़कों को अच्छी तरह जानती थी। बिना किसी वजह ही वे सभी जानवरों को मारते फिरते और पेड़ पौधों और पत्तों को तोड़ते रहते।

छिपकली ने अक्सर देखा था, ऐसे बिगड़ैल लड़कों को अपना क्रूर खेल खेलते हुए। जैसे ही वे पेड़ के पास आए, एक ने छिपकली पर पत्थर से निशाना मारा। मगर वह जल्दी से दो टहनियों के बीच की दरार में जा छिपी। दूसरा लड़का डण्डे को घुमा रहा था, पत्ते को तोड़ने के लिए। छिपकली चौकन्नी थी। जैसे ही लड़के ने डण्डे से निशाना साधा, वह कूद कर उसके सिर पर जा बैठी। उसके ठंडे, चिपचिपे स्पर्श से लड़का जोर से अपना सिर हिलाने लगा। चीखता और चिल्लाता हुआ ऐसे भागा मानो कोई शैतान उसके पीछे पड़ा हो। छिपकली अपनी दरार में वापस चली गई।

पत्ता अब छिपकली का अहसानमन्द था । "तुमने उस राक्षस से मेरी जान बचाई है । मैं तुम्हारा उपकार किस तरह चुकाऊँगा ?" उसने कहा ।

इसी तरह, आपसी मदद और मित्रता में सूखा पेड़, ताज़ा पत्ता और छिपकली शांति से रहने लगे । परन्तु वे बहुत दिनों तक ऐसे न रह सके । एक दिन एक लंबा, तगड़ा लकड़हारा अपनी कुल्हाड़ी, और उसके साथ एक नाटा, मोटा आदमी एक रस्सी लेकर आए, पेड़ की टहनियाँ काटने के लिए ।

उन्हें देखकर पेड़ डर से काँपने लगा । "मेरा अंत आ गया है ।" वह रो पड़ा । डर से पत्ता भी ठण्डा और बेजान पड़ गया ।

छिपकली सोचने लगी । पेड़ में उसे शरण मिली और पत्ते ने छाया दी और उसकी प्यास बुझाई । इन दोनों को तो किसी न किसी उपाय से बचाना ही होगा ।

दोनों आदमी नज़दीक आए । मोटा आदमी लम्बे आदमी से बोला - "पहले टहनियों को काटो, बाद में तने को ।"

लम्बा आदमी बोला - "रुको, मैं इतनी दूर गाँव से चलकर आया हूँ ज़रा-सा आराम कर लूँ । तुम भी कर लो ।" दोनों आँखें मूँदकर लेट गए ।

"यही मेरा मौका है," छिपकली अपने आप से बोली । अचानक उसे एक उपाय सूझा । उसने शरीर का सारा विष मुँह में इकट्ठा किया और लंबे आदमी के कान में पिचकारी की तरह दे मारा ।

आदमी ऐसे कूद पड़ा जैसे किसी बिच्छू ने उसे डंक मारा हो । "बचाओ ! मैं जल रहा हूँ ।"

मोटा आदमी झट से उठा और पूछने लगा – "क्या बात है ?"

"मैं हिल नहीं सकता, मुझे लकवा मार गया है," लम्बा आदमी चीखने लगा । "जब मैं झपकी ले रहा था, तब कुछ भयंकर चीज़ मेरे कान में जा घुसी ।"

मोटे आदमी ने एक मददगार को बुलाया और किसी तरह लम्बे आदमी को गाँव में उसके घर तक पहुँचाया ।

इस विपत्ति की खबर गाँव में आग की तरह फैल गई । जो भी यह कहानी सुनता, अपनी तरफ से बढ़ा-चढ़ाकर दूसरे को सुनाता ।

गाँव के वैद्य ने मरीज़ की जाँच करके बताया कि यह बीमारी पेड़ में निवास कर रहे किसी प्रेतात्मा के प्रकोप से हुई है । आदमी के हाथ में कुल्हाड़ी देखकर ज़रूर उस प्रेतात्मा को गुस्सा आया होगा ।

पंचायत बुलाई गई और पंडितों के सामने यह समस्या रखी गई । बहुत विचार के बाद, प्रमुख पंडित इस नतीजे पर पहुँचे – "यह तो

स्पष्ट है कि पेड़ पर निवास करने वाली प्रेतात्मा दुखी है । हमें उसकी माँग पूरी करके उससे दोस्ती करनी होगी । रोज़ सवेरे, हममें से किसी एक को पेड़ पर मिठाई और जल का भोग चढ़ाना होगा । मुझे विश्वास है कि ऐसा करने से वह प्रेतात्मा हमसे दोस्ती कर लेगी ।''

दूसरी तरफ तीनों दोस्त – पेड़, पत्ता और छिपकली – लकड़हारे के चले जाने की खुशियाँ मना रहे थे ।

''तुमने हमारी जान बचाई है । हम तुम्हारा उपकार कैसे चुकाएँ ?'' पेड़ और पत्ता छिपकली से बोले ।

''अगर तुमने मुझे शरण नहीं दी होती तो मैं कब की मारी जा चुकी होती,'' छिपकली ने जवाब दिया ।

''परन्तु देखो अब क्या हो रहा है ? कुछ लोग हमारी तरफ आ रहे हैं । क्या वे फिर से मुझ पर वार करेंगे?'' पेड़ काँपते हुए बोला ।

गाँव वाले एक दोने में दूध, गुड़ की डली और एक मटके में पानी लेकर आए थे ।

''डरो मत,'' छिपकली फुस-फुसाई । ''वे हमें मारने नहीं आए हैं ।''

गाँव वालों ने दूध और मिठाई को पेड़ के नीचे रखा और उसकी जड़ों में पानी डाला । सूखे-बूढ़े पेड़ ने चैन की साँस ली । उसकी शाखाओं में नई जान आ गई । सूखा पेड़ फिर से ऊपर उठने लगा ।

गाँव वाले रोज़ पेड़ की प्रेतात्मा को भोग लगाने आते । पेड़ फिर से फूल और पत्तों से हरा-भरा हो उठा । कई रंग-बिरंगे पक्षी उस पर बैठकर खुशी से चहकने लगे ।

गाँव वाले खुशी से झूम उठे । उन्हें दोपहर को आराम के लिए

ठण्डी छाया मिल गई। बच्चे भी पेड़ की छाया में खेलने लगे।

मुख्य पंडित ने कहा – "मैंने कहा था ना कि प्रेतात्मा हमारी दोस्त अवश्य बनेगी।"

-: प्रश्नावली :-

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखें-

1. छिपकली ने लकड़ी के प्रहार से पेड़ को कैसे बचाया ?
2. छिपकली ने लकड़हारे से पेड़ को कैसे बचाया ?
3. पेड़ पुनः हरा-भरा कैसे हो गया ?

- *क्या तुमने श्री सुन्दरलालजी बहुगुणा के बारे में सुना है जिन्होंने पेड़ों को गले लगाकर उन्हें कटने से बचाया ? उनके "चिपको आंदोलन" के बारे में अपनी स्कूल से जानकारी प्राप्त करो।*

मनुष्य और मनुष्यत्त्व का आलम्बन है अहिंसा।
सब धर्मों का सार और प्राण है अहिंसा।
प्रश्न आत्म-शान्ति का हो या विश्व-शान्ति का,
तमाम समस्याओं का समाधान है अहिंसा ।।

महाराज युधिष्ठिर और कुत्ता

महाराज युधिष्ठिर प्रसिद्ध पाण्डव राजा थे जिन्होंने हस्तिनापुर पर राज किया । वे और इनके चार भाई - भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव - पाँच पाण्डव कहलाए ।

इन भाइयों और उनके द्वारा लड़े गए युद्ध की कथाएँ हम महाभारत में पढ़ते हैं । इसी महाकाव्य में हम कृष्ण और उनके भाई बलराम के बारें में भी पढ़ते हैं जिन्होंने पाण्डवों का साथ हमेशा निभाया ।

वक्त बीत जाने पर भगवान कृष्ण और बलराम ने इस संसार का त्याग किया और स्वर्ग पहुँचे । अपने प्रियजनों के स्वर्गवास की खबर सुनकर पाण्डव व्यथित हो उठे । उन्होंने इस संसार से संन्यास लिया और हिमालय के मेरुपर्वत की ओर प्रस्थान किया । जैसे-जैसे उनकी यात्रा आगे बढ़ती गई, महाराज युधिष्ठिर का कुत्ता भी उनके पीछे-पीछे चलता रहा ।

इस लम्बी कठिन यात्रा में युधिष्ठिर को छोड़कर बाकी सारे भाई एक-एक करके मृत्यु को प्राप्त हुए । मगर वफादार कुत्ता जीवित रहा और महाराज का इकलौता साथी रह गया ।

जैसा कि हम जानते हैं, महाराज युधिष्ठिर एक अत्यन्त ही गुणी, सत्यवादी, न्यायप्रिय और दयालु राजा थे । अब वे उस लोक की ओर अग्रसर हो रहे थे जहाँ पर सभी सदाचारी मनुष्य मृत्यु के पश्चात् पहुँचते हैं ।

इस स्वर्गलोक के स्वामी इन्द्र थे । उन्हें पता चल चुका था कि युधिष्ठिर उन्हीं के पास आ रहे थे । अतः शीघ्रता से अपने दिव्य वाहन

पर सवार होकर वे महाराज युधिष्ठिर के पास पहुँचे और कहने लगे- “हे गुणसंपन्न राजन्, आप मेरे पवित्र लोक में आने के सुपात्र हैं आपने हमेशा एक पवित्र जीवन जीया है और सभी जीवों से प्रेम करते रहे हैं । अतः आइए, अब स्वर्ग में प्रवेश कीजिए ।”

युधिष्ठिर दिव्य वाहन में प्रवेश करने लगे कि इन्द्र ने कुत्ते के आने पर आपत्ति की । उन्होंने कहा - “हे राजन् ! देवलोक में कुत्तों का प्रवेश वर्जित है । क्या आप नहीं जानते कि कुत्ता एक हीन प्राणी है ? आप ऐसे हीन प्राणी का साथ कैसे कर सकते हैं ? इस कुत्ते को छोड़ दीजिए तथा इस पवित्र वाहन में प्रवेश कीजिए ।”

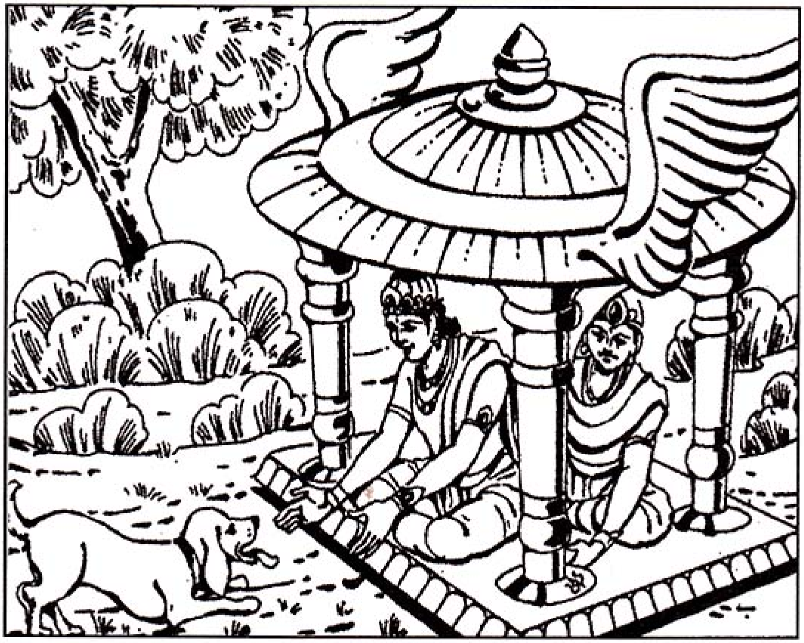

देवलोक में प्रवेश करने की महाराज की तीव्र इच्छा तो थी, परन्तु अपने वफादार कुत्ते को कैसे छोड़ दें ? उन्होंने कहा- “हे देवराज इन्द्र ! स्वर्ग में प्रवेश करना मेरी सबसे बड़ी आकांक्षा है, परन्तु मैं अपने इस

वफादार साथी को इस परम सुख की प्राप्ति के लिए भी नहीं छोड़ सकता ? आप तो बड़े मजे से इसे हीन प्राणी कह रहे हैं, मगर मेरी सोच अलग है। यह जानवर मूक है, मगर इससे अधिक वफादार और कोई नहीं है।"

महाराज ने आगे कहा, "क्या कुत्ता अपने मालिक और उसके परिवार को प्यार नहीं करता ? क्या यह पूरी वफादारी से अपने मालिक की रखवाली नहीं करता है ? क्या आज तक आपने कभी सुना है कि किसी कुत्ते ने अपने मालिक से अहसान फरामोशी की है ? ईश्वर ने कुत्ते को दो महान् गुण दिए हैं - प्यार और वफादारी।"

अब महाराज एकदम भावुक होकर बोले, "यह कुत्ता हर पल मेरे साथ वफादारी और प्यार से रहा है। अतः स्वर्ग की बड़ी से बड़ी खुशियों के लिए भी इसे छोड़ना घोर कृतघ्नता होगी। अतः हे इन्द्र ! मुझे इस कुत्ते के साथ स्वर्ग ले चलें, अन्यथा मुझे यहीं छोड़ दें।"

जैसे ही महाराज ने ये साहसी और सत्य वचन कहे, कुत्ता वहाँ से अदृश्य हो गया और उसके स्थान पर न्याय के देवता, साक्षात् धर्मराज प्रकट हो गए।

धर्मराज ने ये वचन कहे - "हे सत्यवादी राजन् ! मैं न्याय का देवता हूँ। मैं इतने दिनों से आपको देखता आ रहा हूँ। आपके अंतर्मन में इन्सानों और पशुओं के प्रति प्रेम और दया है। अब आप अपना पुरस्कार ग्रहण कीजिए। जाइए और स्वर्ग के सुखों और आनन्द का भोग कीजिए।"

इस तरह महाराज युधिष्ठिर इंद्र के दिव्य वाहन में प्रवेश करके स्वर्ग पहुँचते हैं जहाँ सभी सदाचारी लोग अपने जीवन के अंत में जाते हैं।

-: प्रश्नावली :-

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखें ।

1. इन्द्र ने धर्मराज युधिष्ठिर को स्वर्ग में कुत्ते को लेकर जाने से क्यों मना किया ?
2. युधिष्ठिर ने क्या जवाब दिया ?
3. कुत्ते के स्थान पर कौन प्रकट हुआ ?
4. न्याय के देवता ने धर्मराज युधिष्ठिर की किस प्रकार तारीफ की ?

■ *'कुत्ते की वफादारी' संबंधी खबरों/घटनाओं/कहानियों का संकलन करो ।*

कुछ काम ऐसा करें

कुछ काम ऐसा करें, औरों की पीड़ा हरें ।
दीन-दुःखियों के आँसू पोंछें, पूजा चाहे जितनी करें ।।

सेवा के अवसर ढूँढ़े, शुभ कार्यों से नहीं डरें ।
त्याग में सुख बहुत हैं मित्रों, झूठी शान में नहीं मरें ।।

अनुशासन ही बल है अपना, इसी के अंदर काम करें ।
आशीर्वादों के चुनकर मोती, झोली अपने आप भरें ।।

जीयें तो गर्व से जियें, मरें तो देश की आन मरें ।
चलो कुछ काम ऐसा करें, औरों की पीड़ा हरें ।।

असाधारण दोस्ती

एक दिन एक कुत्ता अपने मुँह में बिल्ली के बच्चों को दबाए इग्लैंड के एक पशु चिकित्सालय के शल्य विभाग में घुसा । वह वहाँ का पुराना मरीज़ था, अतः अधिकारी ने उसे तुरन्त पहचान लिया । कुछ दिन पहले उसने कान के फोड़े का इलाज किया था । कुत्ते के मालिक की प्रतीक्षा किए बिना उसने कुत्ते की तुरन्त जाँच की, मगर वह एकदम ठीक था । फिर उसकी नज़र बिल्ली के बच्चे पर गई, जांच की तो उसके कान में एक फोड़ा दिखा । कान की सावधानी से सफाई और उपचार करने के बाद शल्य चिकित्सक ने चारों ओर देखा, मगर जानवर का मालिक कहीं नज़र नहीं आया । पूछताछ करने पर वहाँ बैठे कुछ लोगों ने बताया कि कुत्ता अपने आप चिकित्सालय में आया था और जैसे ही शल्य- विभाग का दरवाज़ा खुला, वह अंदर घुस गया । चिकित्सक के आश्चर्य की सीमा नहीं रही, जब इलाज के कुछ देर बाद कुत्ता अपने आप बिल्ली के बच्चे को मुँह में उठाकर दरवाज़े से बाहर निकला और सड़क के रास्ते चला गया ।

तीन दिन बाद वह कुत्ता फिर से लौटा, बिल्ली के बच्चे को मुँह में दबाए हुए। इलाज होने तक उसने प्रतीक्षा की और फिर से चला गया। वह तब तक आता रहा जब तक बिल्ली का बच्चा पूरी तरह ठीक नहीं हो गया। इलाज खत्म होने पर उसने आना बंद कर दिया, मानो वह समझ चुका था।

यह घटना बिल्कुल सच है। घटना में आश्चर्य की बात यह है कि कुत्ते को पता था कि उसे कब-कब अस्पताल आना था। बीच के अंतराल बिलकुल वैसे ही थे जैसे उस समय के, जब उसका अपना इलाज हो रहा था।

ऐसी ही एक असाधारण दोस्ती थी एक कबूतर और एक चूहे की। ऐसी दोस्ती हमारी कल्पना से परे है। कबूतर दक्षिणी इंगलैंड के एक अमीर ज़मींदार के अनेक कबूतरों में से एक था। वह ज़मींदार नियम से रोज़ कबूतरों को दाना खिलाता था।

एक दिन उसने एक चूहे को मुँह में दाने भरकर पास के घुड़साल में जाते देखा। जब चूहे ने कई बार ऐसा किया, तो ज़मींदार ने चूहे का पीछा किया। घुड़साल पहुँचकर उसने देखा कि एक ज़ख्मी कबूतर चूहे द्वारा लाये गए दाने खा रहा था।

कुछ दिनों में जब कबूतर ठीक हो गया, तब भी दोनों के बीच यह रिश्ता बना रहा। कबूतर चूहे का इंतजार करता, और चूहा अपने दोस्त के लिए दाना लेकर आता। अपना काम खत्म होते ही बिना किसी शुक्रिया का इंतजार किए, चूहा वहाँ से भाग जाता।

ऐसे ही दो दोस्त थे, एक कुत्ता और एक बत्तख, जो 'चाथम' में रहते थे। कुत्ते का नाम था मिक और वह एक आइरिस शिकारी कुत्ता था। कुछ इन्सानों की तरह वह भी लड़ाई करने से बाज नहीं आता था,

और अनेकों बार तो वह अपनी दोस्त बतख की मेहरबानी से ही बचा था । बतख अचानक प्रकट होकर शोर मचाते हुए दुश्मन के पिछले भाग पर अपनी चोंच से वार करती और उसका ध्यान मिक की ओर से हटा देती थी ।

एक बार जब मिक को बहुत चोट लगी थी और उसे इलाज के लिए अस्पताल ले जाना पड़ा, तब उसकी यह दोस्त भी उसके साथ गयी । बत्तख न सिर्फ उसके पीछे-पीछे गयी, बल्कि वह प्रतीक्षालय में तब तक इंतजार करती रही जब तक उसका दोस्त पूरी तरह ठीक नहीं हो गया । दोनों दोस्त साथ-साथ घर लौटे ।

-: प्रश्नावली :-

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखें ।

1. अपने शब्दों मे लिखो कि किस प्रकार कुत्ता बिल्ली के बच्चे को चिकित्सालय ले गया था ।
2. चूहे ने कबूतर की किस प्रकार मदद की ?
3. कुत्ते और बतख की दोस्ती का वर्णन करो ।

- *इन पशु-पक्षियों की असाधारण दोस्ती की सच्ची घटनाओं को पढ़कर अपने मन में आने वाले विचारों को समाज में फैलाने का प्रयास करो ।*

बन्दर ने माँगा न्याय

यह सन् 1950 के गर्मियों की एक शाम की सच्ची कहानी है। घटना स्थल है- भारत के महाराष्ट्र प्रांत के डिग्रास जिले का एक विश्राम गृह।

एक घायल बन्दर तात्कालिक न्यायालय में आ घुसा, वह भी दिन ढलने पर, जहाँ मैं आपराधिक मामलों की सुनवाई कर रहा था। वह बहुत पीड़ा में था। अपने शरीर पर पड़े ज़ख्मों की तरफ उसने मेरा ध्यान खींचा, जिनसे खून बह रहा था। उस दिन का मेरा काम समाप्त हो चुका था, परन्तु इस बन्दर के अचानक आने से मैं अपनी कुर्सी छोड़ न सका।

मैंने परिस्थिति पर गौर किया और ध्यान से उसकी जाँच करने लगा। वह अपनी चोटें दिखाता रहा। मैंने सोचा कि अगर मनुष्यों को न्यायालय में न्याय पाने का हक है, तो इस जानवर को क्यों नहीं ? मैंने उसे करुणा से देखा और पीछे के दरवाज़े से निकलने की कोशिश की, मगर वह मेरे पीछे-पीछे आता रहा, अपने दर्द भरे पंजे को उठाए।

बन्दर से कुछ कदम आगे चलकर मैंने चपरासियों को पुकारा और उस दोषी का पता लगाने को कहा जिसने इस बन्दर को घायल किया। उन्होंने बताया कि साथ वाले बंगले का माली ही है। वे आश्चर्यचकित रह गए जब मैंने आदेश दिया कि पुलिस इंस्पेक्टर को हथकड़ी के साथ बुलाया जाए। मैं जानता था कि मुझे बहुत समझदारी से अपनी जिम्मेदारी को निभाना है क्योंकि ज़ख्मी अभियोगी मेरे साथ ही था और मेरे हर शब्द को बड़े गौर से सुन रहा था।

इंसपेक्टर नहीं मिला। मैंने सोचा, अच्छा ही हुआ, अब यह मामला मैं स्वयं निपटा सकता हूँ।

मैंने चपरासियों से कहा कि माली को पेश करे । सुनवाई शुरु हुई । अभियोगी ने अपनी शिकायत प्रकट की – अपने घायल हाथों को मेरी तरफ बढ़ाते हुए और अपने ज़ख्मों को चाटते हुए ।

जब मैंने माली से कड़े शब्दों में कहा कि जानवरों को भी मनुष्यों की तरह न्यायालय में मुआवज़ा माँगने का अधिकार है, तब वह सारी बात से सहमत हुआ । मैंने कुछ नियमों का उल्लेख किया जैसे "पशु क्रूरता बचाव अधिनियम" एवं "वन्य जीव संरक्षण अधिनियम' । अब मैंने माली से कहा कि अपने बचाव में कुछ कहे ।

वह रोते हुए मेरे पैरों पर गिर पड़ा बन्दर के सामने ही । अपना जुर्म कबूल करते हुए उसने शिकायत की कि बन्दर उसके बगीचे में तोड़-फोड़ कर रहा था ।

अभियोगी की तरफ देखा तो पाया कि वह अब भी अपने ज़ख्मों की ओर ऐसे इशारा कर रहा था मानो कह रहा हो- "फैसले की बात छोड़िए, मेरे ज़ख्मों को कौन ठीक करेगा ?"

मगर न्याय तो होना ही था । माली की दलील ठुकरा दी गई और

मैंने घोषणा की कि उसने निर्दयतापूर्ण व्यवहार से अपने अधिकारों का अतिक्रमण किया था, इसलिए उसे कैद किया जाए ।

यह सुनकर माली मेरे पैरों पर गिर पड़ा । बन्दर सारे दृश्य को देखते हुए खड़ा था, उसके चेहरे पर क्षमा की भावना भी थी, मगर वह चुप रहा ।

माली से वादा कराया गया कि आगे से वह जानवरों को सिर्फ डराकर भगा देगा । इस शर्त पर उसे छोड़ दिया गया । मगर बन्दर के ज़ख्म ?

जैसे ही अहसानमन्द माली न्यायालय से निकलने लगा, उसने दया से बन्दर की ओर देखा और साथ चलने का इशारा किया । बन्दर पहले तो हिचकिचाया, मगर फिर चल पड़ा, साथ वाली जगह में माली की छोटी-सी झोंपडी में, जहाँ उसके ज़ख्मों का इलाज किया गया ।

मुझे लगा कि वास्तव में दिन भर के आपराधिक मामलों की सुनवाई का कार्य अब समुचित रूप से समाप्त हुआ था ।

-: प्रश्नावली :-

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखें-

1. माली की क्या गलती थी ?
2. बन्दर ने जज से क्या शिकायत की ?
3. जज ने क्या फैसला किया ?

- *बच्चों ! किसी भी जानवर को मारना, सताना, जख्मी कर देना अनुचित है । अपने साथियों को भी ऐसा करने से रोकने का प्रयास करो ।*

चूहे ने बदला आदमी

जानवर एक दूसरे की मदद किस तरह करते हैं, विशेषकर अपनी जाति की, यह आश्चर्यजनक है ।

अकसर देखा गया है कि डॉलफिन मछली अपनी ज़ख्मी साथी की पुकार सुनते ही तुरन्त चली आती है । दूसरी दो डॉलफिनें आकर अपने ज़ख्मी साथी को सतह की ओर धकेलते हुए ले आती हैं ताकि वह साँस ले सके, और ज़रूरत पड़ने पर तैरने में भी मदद करती हैं ।

इस कहानी में आप देखेंगे कि किस तरह चूहे भी एक-दूसरे की मदद करते हैं ।

एक अमरीकी लेखक श्रीमान् ब्राउन ने यह घटना बताई । एक दिन उन्होंने दो चूहों को अजीब तरह से चलते हुए देखा । दोनों ने एक तिनके के दोनों सिरे को अपने-अपने मुँह में पकड़ रखा था । साथ-साथ चल रहे थे, बस, एक चूहा दूसरे से थोड़ा आगे चल रहा था ।

बिना सोचे समझे अनायास ही ब्राउन ने पत्थर उठाकर उन पर फेंका । यह हमारी सभ्यता की सीख है कि अगर आप किसी चूहे या साँप या किसी भी प्राणी को चुपचाप खुद के रास्ते पर जाते हुए देखो तो बेशक उस पर पत्थर फेंको या छड़ी से मारो ?

पत्थर आगे वाले चूहे को लगा और वह मर गया । मगर आश्चर्य की बात कि दूसरा चूहा भागा नहीं । वह घबराकर वहीं चक्कर लगाने लगा ।

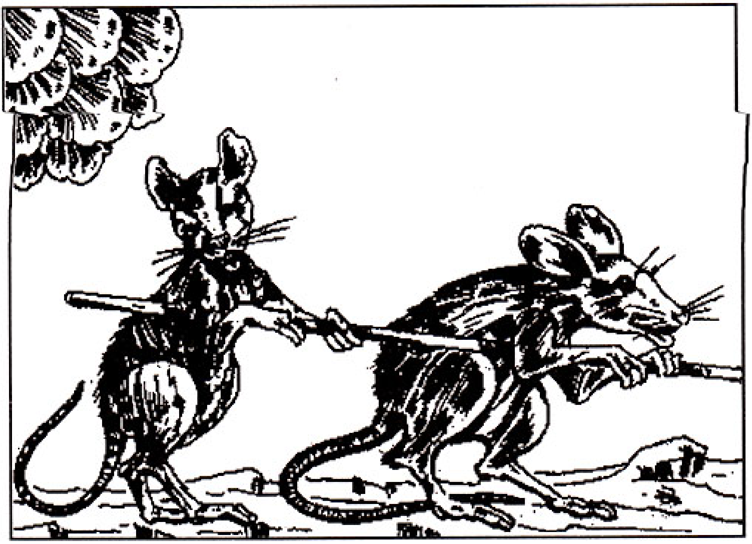

उसके व्यवहार पर चकित होकर ब्राउन ने उसे उठाया और तुरन्त जान लिया कि वह अंधा था । एक ही क्षण में वह उस तिनके का महत्त्व समझ गए जिसे दोनों ने पकड़ रखा था । जिस चूहे को उन्होंने मारा, वह तो नेकी की राह चल रहा था, अपने अंधे भाई को रास्ता बताने । इस घटना ने ब्राउन के जीवन को बदल दिया ।

उन्होंने कहा – "उस रात मैं सो न सका । मैंने अपने आप से पूछा "मनुष्य बड़ा है या चूहा ?"

"मैं अगले दिन नाश्ता न कर सका क्योंकि माँस परोसा गया था । किसी निरीह जानवर को मारकर ही माँस परोसा जाता है, इस विचार से मैं परेशान हो गया । मैंने उसी समय हिंसा का त्याग किया और शाकाहारी बन गया ।"

-: प्रश्नावली :-

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखें-

1. दोनों चूहे किस प्रकार चल रहे थे ?
2. मिस्टर ब्राउन ने चूहों को देखते ही क्या किया ? क्या उन्होंने उचित किया ?
3. दोनों चूहों को क्या हुआ ?
4. मिस्टर ब्राउन शाकाहारी कैसे बने ?

■ *क्या ऐसी कोई घटना तुम्हारे साथ हुई है जिससे तुम्हारे मन में प्रायश्चित का भाव जगा हो । अगर हाँ, तो अपने दोस्तों को बताते हुए ईश्वर से अपनी गलती के लिए क्षमा मांगो और आगे के लिए सावधान रहो ।*

जाति-धर्म के क्षुद्र अहं पर,
लड़ना केवल पशुता है ।
जहाँ नहीं माधुर्य भाव हो,
वहाँ कहाँ मानवता है ।।

एक जाति हो, एक राष्ट्र हो,
एक धर्म हो धरती पर ।
मानवता की 'अमर' ज्योति
सब ओर जगे, जन-जन घर-घर ।।

– उपाध्याय श्री अमरमुनिजी

बन्दरिया का मातृ-प्रेम

एक आदमी जो धीरे-धीरे मृत्यु के मुँह में जा रहा था, आज अगर जीवित है तो एक बन्दरिया के मातृ-प्रेम के कारण ।

बन्दरिया ने न केवल आदमी की प्यार से देखभाल की, बल्कि उसे बचाने के लिए एक रक्षा अभियान का प्रबन्ध भी किया, जिससे उसकी जान बच गई ।

मोहम्मद युसुफ, एक ऑटो गराज का मालिक, पूना जाने वाली रेलगाड़ी से करीबन आधी रात के बाद गिर गया । रेलगाड़ी अभी 'करजट' से चली ही थी कि अंदर जा रहे किसी यात्री ने डिब्बे का दरवाज़ा बन्द कर दिया । दरवाज़े के हैंडल को उसने पकड़ लिया, मगर उसकी झूलती हुई टाँगे पटरी के पास पड़े पत्थर इत्यादि से टकराकर बुरी तरह घायल हो गई ।

कड़ाके की सर्दी और पाँव की असहनीय पीड़ा के कारण वह अपना सन्तुलन खोकर पटरी पर गिर पड़ा जब रेलगाड़ी तेज़ रफ्तार से घाटी पर चढ़ रही थी ।

कुछ घंटों बाद सूर्योदय के समय मोहम्मद ने आँखें खोली तो गिद्धों और चीलों को अपने आस-पास मंडराते पाया ।

आस-पास देखकर उसने जाना कि वह पहाड़ी की ढलान पर एक सुनसान जगह पर था जहाँ आमतौर से किसी की नज़र नहीं पड़ेगी । दूर से आ रही रेलगाड़ी की सीटी से उसे अपने सफर का ध्यान आया । उसका दिल दहल उठा ।

जेबें टटोली तो पाया कि किसी ने खाली कर दी थीं । उसने

रात की घटना याद करने की कोशिश की । उसकी आखिरी याद तब की थी जब उसके हाथ हैंडल से छूटे और वह पटरी पर गिरा । उसके बाद उसे कुछ याद नहीं था । पटरी से इतनी दूर वह पहुँचा कैसे ? ज़रूर किसी ने उसे बेहोश पाया होगा और पटरी से दूर घसीटकर उसकी जेबें खाली की होंगी जिनमें पाँच सौ रुपये के अलावा कुछ कागज़ भी थे ।

ज़िंदगी और मौत के बीच, आशा और निराशा के बीच मोहम्मद को कभी-कभी किसी की परछाई नज़र तो आती, मगर वह देख न सका, क्योंकि पटरी जहाँ से लोग गुजर रहे थे, ऊँचाई पर थी और दस-बारह मीटर की दूरी पर भी ।

एक बार उसके कराहने की आवाज़ सुनकर कबीले के कुछ लोग उसकी तरफ आए, मगर उसके खून से सने कपड़े देखकर भाग गये ।

कुछ देर बाद, किस्मत ही समझो, उसकी रक्षक एक बन्दरिया के रूप में आई । मोहम्मद की कराहों और हाव-भावों से बंदरिया का ध्यान उसकी तरफ पड़ा ।

जब मोहम्मद ने अपने घावों की तरफ इशारा किया, तो अपने दो चिपटे बच्चों के साथ वह हिचकिचाते हुए मोहम्मद के पास धीरे-धीरे आने लगी । जब वह मोहम्मद से एक या दो कदम की दूरी पर थी, एक दो पल के लिए उसने इधर-उधर देखा और फिर चुपचाप अपने बच्चों को उसके पास छोड़ दिया । अपने ही तरीके से बच्चों को यह भी समझा दिया कि उसकी गैर-मौजूदगी में मोहम्मद का ख्याल रखे ।

मोहम्मद समझ गया कि बन्दरिया उसके लिए कुछ न कुछ मदद ज़रूर लाएगी । मगर जैसे-जैसे वक्त बीतता चला, उसकी चिंता बढ़ने लगी ।

धूप के बढ़ने से उसका दर्द भी बढ़ रहा था । और फिर पता नहीं बन्दरिया कहाँ गई थी, अपने बच्चों को उसकी देख-रेख में छोड़कर ।

मोहम्मद के अनुसार करीबन एक घंटे के बाद उसने बन्दरिया को एक ग्रामीण के साथ आते देखा । .... वह आदमी कुछ लोगों के साथ बैठकर आग सेक रहा था जब बन्दरिया ने उन्हें देखा । ग्रामीण को लगा कि वह अकेला मोहम्मद की मदद नहीं कर पाएगा, इसलिए उसने कहा कि वह जाकर कुछ पुलिस वालों को खबर करेगा ।

बाद में उसने मोहम्मद को बताया कि किस प्रकार बन्दरिया करीबन तीन मील की दूरी तय करके उनके पास पहुँची । उन्हें देखते ही वह जोर-जोर से आवाज़ें करने लगी । अपनी बोली और इशारों से जताया कि वे उसके साथ चलें । वह इतनी चिंतित और घबराई हुई थी कि उन्होंने अंदाज़ लगाया कि कोई बन्दर या उसका बच्चा कहीं फँस गया या रेल के नीचे आ गया है ।

ग्रामीण उसके पीछे चल पड़ा । बिलकुल अंदाज़ नहीं था कि कितनी दूर जाना है । उसने दो-तीन बार लौटने की कोशिश की, मगर बन्दरिया ने उसे रुकने नहीं दिया । वह कूदकर उसका रास्ता रोक लेती और इतनी करुण आवाज़ में आगे चलने का इशारा करती कि ग्रामीण को चलना ही पड़ा जब तक वे उस स्थान तक नहीं पहुँचे, जहाँ मोहम्मद पड़ा हुआ था ।

जब ग्रामीण मदद का प्रबन्ध करने गया, तब बन्दरिया मोहम्मद के पास बैठी रही । पास के पेड़ से कुछ जंगली बेर भी तोड़ लाई । अपने हाथों में रखकर खाने का इशारा किया । मगर गिरने से उसके कुछ दाँत टूट गये थे, जबड़ों में भी असहनीय पीड़ा थी, मोहम्मद अपना मुँह खोल तक नहीं सका । इसलिए उसने खाने की कोशिश भी नहीं की ।

जल्दी ही, ग्रामीण के साथ कुछ पुलिस वाले आ पहुँचे । उन्होंने तुरन्त ही मोहम्मद को एक इलेक्ट्रिक इंजन में डाला । इंजन से मोहम्मद ने देखा कि बन्दरिया अपने बच्चों को चिपटाए पेड़ों पर चढ़कर गायब हो गई ।

मोहम्मद को स्थानीय 'ससून अस्पताल' में भर्ती कराकर उसका इलाज किया गया । उसके दाँये पैर की हड्डी टूट गई थी, अंगूठा भी गायब था ।

मोहम्मद कहता है – "मै जब भी यह घटना याद करता हूँ, यह सोचकर दहल जाता हूँ कि अगर बन्दरिया ने आकर अपनी ममता नहीं दिखाई होती तो मेरा क्या होता ?"

-: प्रश्नावली :-

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखें-

1. मोहम्मद युसुफ की दुर्घटना कैसे हुई ?
2. बन्दरिया ने घायल व्यक्ति को देखकर क्या किया ?
3. गाँव वालों ने मोहम्मद की मदद किस प्रकार की ?
4. अगर बन्दरिया बोल सकती तो गाँव वालों को मोहम्मद के बारे में क्या कहकर बताती ?

हिंसा से मनुष्य-जाति कष्ट ही पाएगी ।
अहिंसा की उपयोगिता स्पष्ट हो जाएगी ।
कैसी निराधार सभ्यता चाहता है मानव,
अहिंसाविहीन सभ्यता नष्ट हो जाएगी ।।

एक समय आता है, जब मनुष्य अनुभव करता है कि थोड़ी-सी मनुष्य की सेवा करना लाखों जप-ध्यान से कहीं बढ़कर है ।

– स्वामी विवेकानंद

आदमी के प्रिय दोस्त

सर्दी की एक रात थी, अपने दो कुत्तों 'बेस्स' और 'बॉबी' के साथ बैठकर आग सेक रहा था तब मुझे दो साल पहले की वह रात याद आई जब एक अलग तरह की आग मेरे सामने थी ।

मैं अपने जीते जी उस आग को कभी नहीं भुला सकता । ठण्डी-अंधेरी रात थी । मैंने कोट और टोपी पहनी और कुत्तों को देर रात की सैर कराने निकला । अपनी छड़ी उठाकर मैंने दोनों को पुकारा और चल पड़ा । दोनों कुत्ते रास्ते से परिचित थे और भागने लगे, ठंडी हवा से बेखबर जो मेरे शरीर को चीर रही थी । रास्ता एक झरने के किनारे से होते हुए घाटी से निकलकर 'मेनोर हाउस' तक जाता था, जहाँ से हम मुड़कर वापस लौट आते ।

मेनोर हाउस वहाँ कई सदियों से खड़ा था । मुझे याद है कि मैं अक्सर सोचा करता था कि उस महल के अंदर और आसपास क्या-क्या घटित हुआ होगा, किस तरह मेनोर के मालिक ने अतिथियों की आवभगत की होगी, वहाँ के लोग कैसे रहे होंगे ! अगर वह घर बोल सकता तो कितनी कहानियाँ सुनाता ! फिलहाल जो मालिक वहाँ थे, आसपास की काफी ज़मीन उन्हीं की थी, जिसे वे स्थानीय किसानों को सस्ते दामों में किराये पर देकर गाँव में सबके साथ अच्छे संबंध रखते थे ।

मैंने नदी पार की और घाट का आधा रास्ता तय कर लिया था तब मुझे आस-पास कुछ दुर्गंध महसूस हुई । अजीब-सी बदबू थी, शायद लकड़ी जैसी किसी चीज के जलने की । पता नहीं किस चीज़ की बदबू थी ? मैंने उसे अनदेखा करने की सोची, मगर मेरे कुत्ते चुप न रह सके, वे भौंकते हुए इधर-उधर घूमने लगे । मैंने उन्हें चुप करने की कोशिश

की पर उन्होंने मेरी एक न सुनी, जबकि वे आमतौर पर एकदम आज्ञाकारी थे ।

जैसे ही मैं वापस मुड़ने लगा, पेड़ों के बीच में से एक लाल रोशनी दिखी । मैं तेज़ी से चलने लगा । पास जाकर देखा – एक बड़ा सा आग का गोला ! पूरा अस्तबल जल रहा था ।

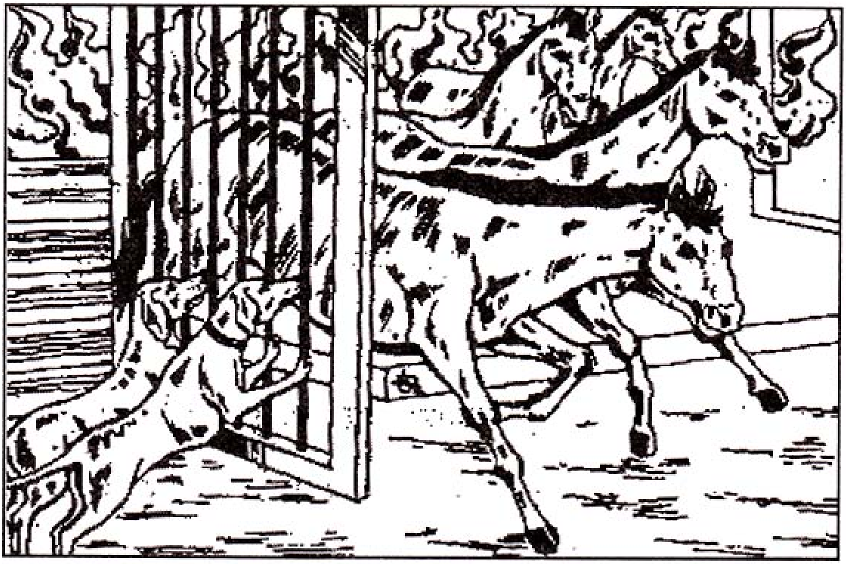

मैं चिल्लाते हुए आगे बढ़ा- लोगों का ध्यान आकर्षित करने के लिए । मगर मैं अस्तबल के अन्दर पहुँच नहीं सका । इतने में बेस्स तेज़ी से आगे बढ़ी जैसे पिस्तौल से गोली निकली हो । बिना झिझक के वह दरवाज़े के अन्दर घुसी । मैंने उसे जोर से पुकारा, मगर उसने ध्यान ही नहीं दिया । दिल मुट्ठी में रखकर मैं उसे पकड़ने के लिए आगे बढ़ा तभी कुछ लोग पानी की बाल्टियाँ लेकर आए और अस्तबल की ओर बढ़ने की कोशिश करने लगे ।

उसी क्षण मैंने एक अजूबा देखा । अस्तबल का दरवाज़ा खुला और करीब एक दर्जन घोड़े बाहर भागे और उनके पीछे बेस्स जोर से भौंकती

हुई आई । बॉबी भी मदद करने आगे बढ़ा । दो मिनट में पूरा अस्तबल खाली हो गया और आग में एक भी घोड़ा नहीं मरा ।

जब आग काबू में आई, तब मैंने अपने कुत्तों को खोजा और उन्हें घोड़ों के पास इस तरह बैठा पाया जैसे कुछ हुआ ही नहीं था । आग ने उतना नुकसान नहीं किया, जितना मैंने सोचा था । मैं घर लौटा । सारी रात सोचता रहा कि आखिर बेस्स ने घोड़ों को किस तरह बचाया ।

अगली सुबह, आहट सुनकर जब मैने दरवाज़ा खोला तो देखा कि बंगले के मालिक बंगले के कागज़ात के साथ खड़े हैं । घोड़ों को बचाने में मेरे कुत्तों की बहादुरी का उपकार उन्होंने इस प्रकार चुकाया । अब वह बंगला, जिसे मैं कभी किराये पर लिया करता था, मेरा है । उन्होंने यह भी वादा किया कि आगे से मेरे पशु चिकित्सक का भुगतान वे ही करेंगे ।

आज भी इन कुत्तों को घुमाते हुए मुझे गर्व होता है । मैं जानता हूँ कि ये ही आदमी के सबसे अच्छे दोस्त हैं और मैं खुश हूँ कि ये कुत्ते मेरे हैं ।

-: प्रश्नावली :-

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखें –

1. लेखक अपने कुत्तों को घुमाने कहाँ तक ले जाता था ?
2. नदी पार करते ही कैसी गंध महसूस हुई ?
3. लोग बाल्टियाँ लिए कहाँ जा रहे थे ?
4. मेनोर हाउस के मालिक ने कुत्तों को किस प्रकार पुरस्कृत किया ?
5. कुत्ते मनुष्य के कैसे दोस्त हैं ? यह बात सिद्ध होने जैसी अन्य घटना लिखो ।

इतने भी मूक नहीं

करीब तीस साल पहले इटली के पाम्पई शहर के एक भाग में कुछ आदमी खुदाई कर रहे थे। यह वही शहर था जो ईसा की पहली शताब्दी में "वेसुवीयस" नामक ज्वालामुखी फटने से तबाह हो चुका था।

खुदाई करते वक्त एक घर के बाहर एक छोटे लड़के का शव मिला। उसे देखकर ऐसा लग रहा था मानों सोया हुआ हो। वह छोटा बालक ज़हरीली गैस और ज्वालामुखी से निकली लाल भस्म की चपेट में आ गया था।

लड़के के एकदम पास एक बड़ा कुत्ता था जिसके दाँत मालिक के कोट में अटके हुए थे। प्रतीत हो रहा था कि कुत्ते ने बालक को बचाने की खूब कोशिश की।

कुत्ते के गले मे एक चाँदी का पट्टा था। धातु पर काली परतें जमी हुई थी। साफ करने पर दिखा कि लैटिन भाषा में उस पर खुदाई की गई थी– "इस कुत्ते ने तीन बार अपने मालिक की जान बचाई, एक बार आग से, एक बार पानी से और एक बार चोरों से।"

और इस आखिरी वक्त में भी, जब तबाही आसमान से बरस रही थी, तब भी इस वफादार जानवर ने चौथी बार अपने मालिक को बचाने की कोशिश की। ...

... जब जनरल चार्ल्स गोर्डन भारत में काम कर रहे थे, उनके पास भी एक शानदार लाल कुत्ता था।

एक दिन बनारस के निकट गंगा नदी में तैरते वक्त जनरल ने देखा कि कुत्ता नदी के किनारे इधर से उधर भागता हुआ जोर से भौंक रहा था, उनका ध्यान आकर्षित करने हेतु।

मालिक ने सोचा गर्मी के दिन हैं, इसलिए ठण्डे पानी को देखकर वह मज़ा ले रहा है ।

असल में एक बड़े से घड़ियाल को अपने मालिक की ओर तेज़ी से बढ़ते देखकर वह उन्हें खतरे से सावधान करने की कोशिश कर रहा था । जब वह ऐसा नहीं कर पाया, तो वह शानदार जानवर पानी में कूद पड़ा तैरकर सीधा घड़ियाल के जबड़ों तक पहुँचा, और इस तरह अपने मालिक की जान बचाई ।

आज नदी के उस तट पर इस वफादार जानवर की आदमकद काँस्य प्रतिमा है जिस पर जनरल गोर्डन के असीम शोक और कृतज्ञता के शब्द अंकित है ।

... एक और कहानी है अस्तबल में एक घोड़ी की । उसका मालिक एक दिन उसे बाहर लेकर जाने की कोशिश कर रहा था । मगर उस दिन वह अपनी जगह से हिली तक नहीं । गुस्से में मालिक, जो जल्दबाज और चिड़चिड़ा था ही, उसके माथे पर मुक्का मारता रहा, मगर

वह अडिग खड़ी रही । जब मालिक की नज़र नीचे पड़ी तो देखा कि उसका अपना बेटा घोड़ी के दोनों खुरों के बीच में आराम से सो रहा था ।

एक जानवर की बुद्धिमानी और मालिक के प्रति वफादारी का इससे बड़ा और क्या सबूत मिल सकता है ? इससे कितना विपरीत है आदमी द्वारा जानवरों का ओछा और शर्मनाक शोषण, चिकित्सकीय अनुसंधान में उनकी चीर-फाड़, फर के लिए उनको पकड़ना, अपने मनोरंजन के लिए बैलों की लड़ाई करवाना इत्यादि ।

... केप्टन रैन्सम एक हाथी की कहानी कहते थे जिसे उन्होंने अफ्रीका में देखा था, कहीं चलते हुए । वह हाथी पालतू था और ज़मीन में गहराई तक गड़े एक लंबे खूँटे से बाँध दिया गया था, जंजीरों द्वारा ।

जंजीर लम्बी थी ताकि वह चारों ओर उगी घास को घूमते हुए खा सके । कुछ ही देर में उसने अपने घेरे की सारी घास खा ली ।

केप्टन रैन्सम हैरत और मजे से देखते रह गए । अपने घेरे की घास खत्म होते ही हाथी खूँटे तक जाता, उसे हिला-हिलाकर वहाँ से निकाल देता, और फिर दूसरी हरी जगह पर गाड़कर अपना भोजन जारी रखता ।

क्वीन्सलैंड एस.पी.सी.ए ने वीरता का प्रथम पुरस्कार एक दस महीने के जर्मन शेफर्ड स्टार्म को दिया जिसने अपने घायल मालिक की मदद के लिए एक कार को रोक लिया था ।

कुत्ता कार के ऊपर चढ़ गया और तब तक सामने के काँच पर अपना पंजा मारकर रोनी आवाज़ करता रहा जब तक चालक ने गाड़ी नहीं रोकी । फिर वह उसे पास की खाई तक ले गया, जहाँ उसके घायल मालिक टेरेन्स कॉलिन्स अपनी उलटी हुई गाड़ी में गिरे पड़े थे । चालक ने मदद की और शीघ्र ही टेरेन्स कालिन्स अस्पताल में ठीक हो गए ।

-: प्रश्नावली :-

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखें-

1. कुत्ते के पट्टे पर क्या लिखा हुआ था ?
2. कुत्ते ने तैरकर अपने मालिक को कैसे बचाया ?
3. इस घटना से तुम क्या समझते हो ?
4. हाथी की होशियारी किस घटना से प्रमाणित होती है ?
5. एस.पी.सी.ए. ने जर्मन शेफर्ड कुत्ते को पुरस्कार क्यों दिया ?
6. एस.पी.सी.ए. (सोसाइटी फॉर प्रिवेन्शन ऑफ क्रूअल्टी टू एनीमल्स) के कार्यों के बारे में जानकारी प्राप्त करो ।

ममता के बिना मातृत्व पूरा नहीं होता ।
करूणा के बिना कवित्व पूरा नहीं होता ।
मनुष्य अधूरा है मनुष्यत्व के बिना मगर,
अहिंसा के बिना मनुष्यत्व पूरा नहीं होता ।।

धर्मों से ही इंसान के चरित्र का निर्माण होता है, यदि धार्मिक एकता के समय भी कोई यह सोचता है कि उसी के धर्म का विस्तार हो और दूसरे धर्मों का विनाश हो तो ऐसे लोगों के लिये मुझे दिल से लज्जा महसूस होती है । मेरे अनुसार सभी धर्मों के धर्म ग्रंथों पर एक ही वाक्य लिखा होना चाहिए -

"मदद करें और लड़े नहीं","एक दूजे का साथ दें ना कि अलग करें", "शांति और करुणा से रहें, ना कि हिंसा करें ।"

– स्वामी विवेकानंद

—: शाकाहार :—

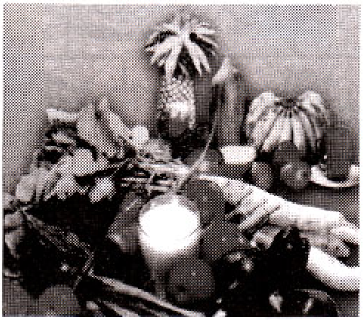

शाक + आहार = शाकाहार — वे खाने की वस्तुएं जो पेड़—पौधों—जमीन—पानी—सूर्य की रोशनी के संयोग से बनती हैं। साथ ही शाकाहारी जानवरों यथा गाय, भैंस, बकरी का दूध भी शाकाहार में आता है।

दूध देती हुई गाय

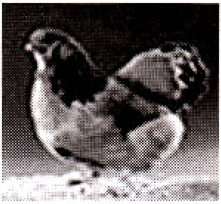

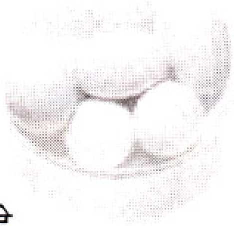

मुर्गी देती है - अंडे

कोई कहता- संडे हो या मंडे
रोज खाओ अंडे, पर सब कहते -
पीओ खूब दूध,
पर मत खाओ तुम अंडे ।

प्रश्न : मैं सोचता- जैसे गाय देती दूध, मुर्गी देती अंडे,
जब पी सकते हैं दूध, तो क्यों न खाएं अंडे ?

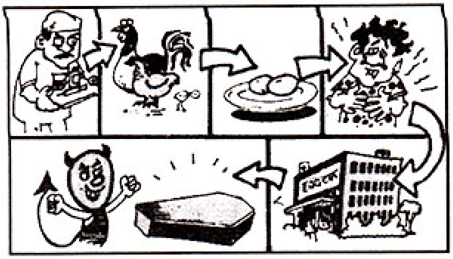

उत्तर : क्योंकि अंडे हैं, रोगों की जड़ और मांसाहार,

बच्चों ! दूध है 'जीवनदाता', पौष्टिक शाकाहार ।

जब किसी बच्चे की मां जन्म देते ही दुनियां में नहीं रहती तो वह बच्चा गाय के दूध के सहारे ही जीता है।

ह्आ न दूध 'जीवनदाता'

दूध में ही मिलाकर पिलाती मां तुम्हें,
बोर्नविटा, हॉर्लिक्स या कॉम्प्लान,
इसी से तो तुम रहते स्वस्थ–तंदुरुस्त,
बनते फुर्तीले और बलवान।

हुआ न दूध 'पौष्टिक'

बच्चों ! अपनाओ तुम हमेशा शाकाहार,
और शान से कहो – मैं शाकाहारी हूँ ।

हमारे घर में, हमारे आस–पड़ोस में,
हमारे समाज में कई मांसाहारी हैं,
हम शाकाहारी क्यों और कैसे बनें ?

सबको बताओ –

हमारी अर्थात् मानव की शारीरिक रचना शाकाहारी प्राणी की है। निम्नांकित तालिका दिखाकर समझाओ –

क्र सं	शारीरिक अंग	शाकाहारी प्राणियों में (मनुष्य सहित)	मांसाहारी प्राणियों में
1-	त्वचा छिद्र	होते हैं, जिससे पसीना बाहर निकलता है।	नहीं होते हैं, ये सूर्य की गर्मी में बाहर नहीं निकलते इसलिए अतिरिक्त पानी (पसीना) जीभ से बाहर निकालते हैं।
2-	पंजे/नाखून	तीखे कठोर और बड़े नहीं होते	तीखे/पैने कठोर बड़े–बड़े होते हैं जिससे ये शिकार पर झपटकर काबू पाते हैं।
3-	दाँत–दाढ़	सामने के दाँत नुकीले एवं धारदार नहीं होते। दाढ़ें चौड़ी एवं चपटी होती हैं ताकि भोजन अच्छी तरह चबाया जा सके।	सामने के दाँत नुकीले एवं धारदार होते हैं जिससे मांस फाड़ सकते हैं। दाढ़ें चौड़ी चपटी नहीं होतीं क्योंकि इन्हें भोजन चबाने की आवश्यकता नहीं पड़ती।
4-	लार ग्रंथियां	विकसित हैं, इससे भोजन निगलने से पूर्व मुख में भोजन सुपाच्य बनता है।	छोटी/अविकसित हैं क्योंकि इन्हें अनाज या फल–सब्जी पचाने की आवश्यकता नहीं है।
5-	आँतें	आँतों की लम्बाई ज्यादा होती है क्योंकि शाकाहारी पदार्थ जल्दी खराब नहीं होते।	आँतों की लम्बाई अधिक नहीं होती जिससे शरीर में तेजी से सड़ता मांस जल्दी ही बाहर निकल जाता है।
6-	पेट में अम्ल	पेट का अम्ल अधिक तीव्र नहीं होता।	पेट में तीव्र हाइड्रोक्लोरिक अम्ल उत्पन्न होता है जिससे पशुओं की मांसपेशियां षीघ्रता से पचाई जा सके।
7-	आँखें	रात के अंधेरे में नहीं देख सकते।	चमकीली होती हैं, रात के अंधेरे में देख सकते हैं।

शाकाहारी जीवों का पाचनतन्त्र

मनुष्य का पाचन तंत्र

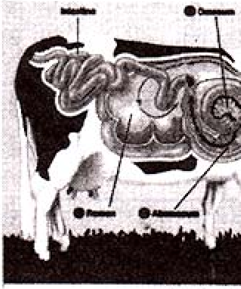

गाय का पाचन तंत्र

शाकाहारी जीवों के पाँव

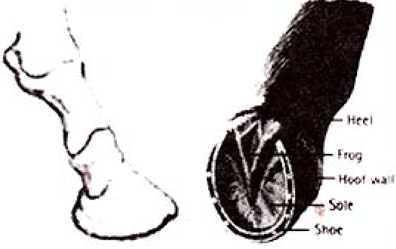

मनुष्य के पाँव की आंतरिक संरचना

माँसाहारी जीवों का पाचनतन्त्र

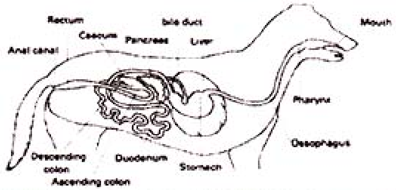

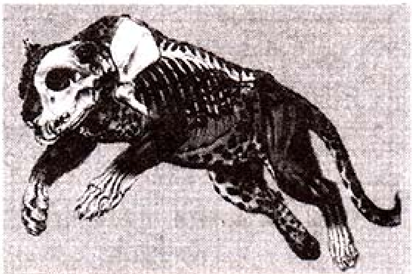

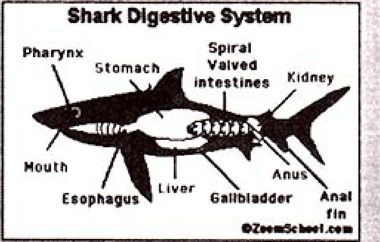

माँसाहारी जीवों के पाँव

माँसाहारी जीवों के पाँव की आंतरिक संरचना

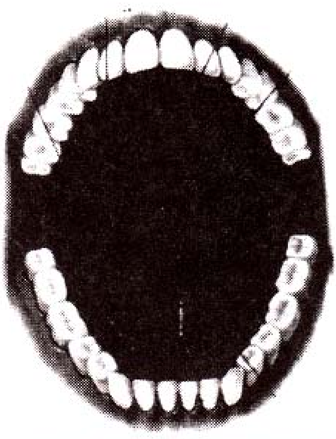

मनुष्य के मुख के अंदर का चित्र

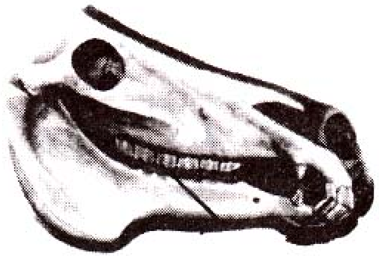

घोड़े के दाँतों का चित्र

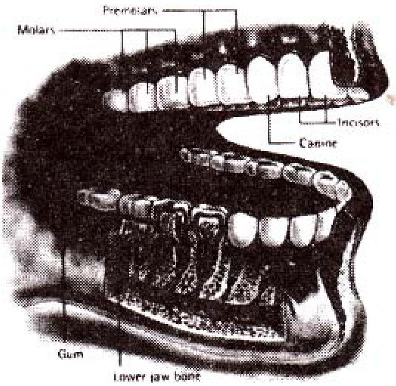

मनुष्य के जबड़े एवं दाँतों का चित्र

शेर के दाँतों एवं मुख का चित्र

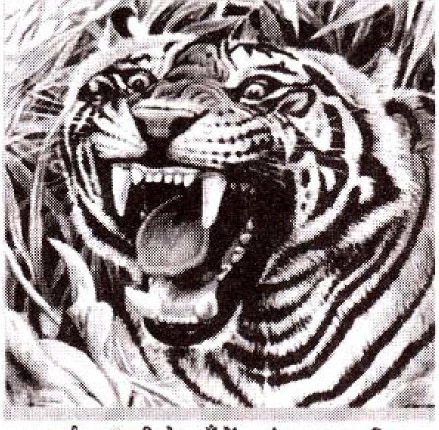

शार्क मछली के दाँतों एवं मुख का चित्र

साँप के दाँतों का चित्र

माँसाहारी प्राणियों के जबड़े एवं दाँतों के चित्र

''क्या शाकाहार संपूर्ण आहार में आता है ?''
निश्चित रूप से हाँ
''केवल शाकाहार से हम कमजोर रह जाएंगे ?''
नहीं बच्चों, कदापि नहीं।

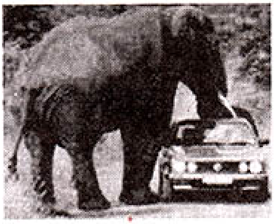

हाथी और घोड़ा शाकाहारी जानवर हैं,
सोचो ! हाथी बलवान जानवर है कि नहीं ?

घोड़ा कितना तेज दौड़ता है, देखते हो ना ! टी.वी. पर, फिल्मों में।

अब हम परिचित कराते हैं आपको कुछ जानी-पहचानी विश्व प्रसिद्ध शाकाहारी हस्तियों से -

डा. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम
भूतपूर्व राष्ट्रपति

अमिताभ बच्चन
फिल्म कलाकार

श्री मनमोहन सिंह
पूर्व प्रधानमंत्री

लेखक

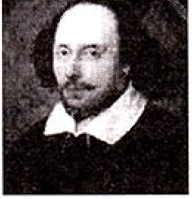
विलियम शेक्सपियर

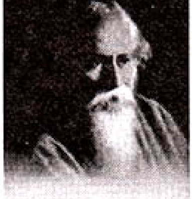
रविन्द्रनाथ टैगोर

वात्स्यायन 'अज्ञेय'

जार्ज बनार्डशा

वैज्ञानिक

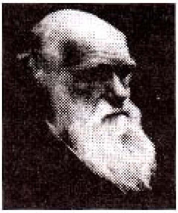
चार्ल्स डार्विन

अल्बर्ट आइंसटीन

लियो टॉलस्टाय

बेंजमिन फैंकलिन

सर इसाक न्यूटन

इसके अतिरिक्त भी प्रत्येक क्षेत्र में अनेक शाकाहारी व्यक्तियों ने प्रसिद्धि हासिल की है। जैसे-

पहलवान गुरू हनुमान

क्रिकेट खिलाड़ी अनिल कुंबले

इसी तरह अनेक विश्व प्रसिद्ध शाकाहारी महिलाएँ भी हैं, जिन्होंने हर क्षेत्र में प्रगति की है।

उदाहरणार्थ- ब्रिटिश महिला पैटरीव्ज पावर लिफ्टिंग चैम्पियन शाकाहारी हैं।

टैनिस खिलाड़ी मार्टिना नवरतिलोवा – पहले मांसाहारी थीं, दया की भावना से कई वर्षों से शाकाहारी बन गई हैं।

एशियन गेम्स 1986 में 4 स्वर्ण पदक एवं 1 रजत पदक हासिल कर विश्व रिकार्ड बनाकर भारत का मस्तक गौरवान्वित करने वाली भारतीय एथलीट पी. टी. उषा शाकाहारी हैं। अब तक अन्तरराष्ट्रीय स्तर के 101 पदक प्राप्त कर चुकी हैं।

बच्चों, इस सूची का कोई अंत नहीं है, धीरे–धीरे यह सूची बढ़ती जा रही है। तुम भी ऐसी सूची तैयार कर सकते हो और अपने मित्रों को शाकाहार के लिए प्रेरित कर सकते हो।

शाकाहार के संबंध में कुछ अन्य महत्त्वपूर्ण तथ्य-

- कोई व्यक्ति पूर्ण शाकाहारी तो हो सकता है परंतु पूर्ण मांसाहारी नहीं।
- अनेक षौधों से यह सिद्ध हो चुका है कि मांसाहार रोगों का जन्मदाता है।
- विभिन्न धर्मों में मांसाहार का निषेध (मनाही) है।
- संसार के लगभग सभी महापुरुषों द्वारा मांसाहार की निन्दा की गई है।
- शाकाहार अपेक्षाकृत सस्ता पड़ता है।
- एक मांसाहारी व्यक्ति पर होने वाले खर्चे से आठ शाकाहारी व्यक्तियों का पेट भरा जा सकता है।
- शाकाहारी भोजन की तुलना में उतने ही मांसाहारी भोजन के लिए 7 गुना अधिक भूमि की आवश्यकता होती है।
- मांसाहार जल समस्या का कारण भी बनता जा रहा है। यदि एक किलो गेहूँ के लिए 50 गैलन पानी की आवश्यकता होती है तो उतने ही गौमांस उत्पादन के लिए 1000 गैलन पानी की आवश्यकता होती है।
- पृथ्वी का तापमान (ग्लोबल वार्मिंग)बढ़ने का एवं जलवायु के असामान्य होने का एक प्रमुख कारण है– मांस का उत्पादन। मांसाहार से होने वाली हानियों के प्रकाश में आने से ही विदेशों में मांसाहार का प्रतिशत कम होता जा रहा है।
- पशु–पक्षी भी सजीव प्राणी हैं, वे मनुष्य के किसी न किसी रूप में सहायक हैं जैसे गाय दूध देती है, बैल खेती में सहायक है, गधा बोझा ढोता है आदि। मनुष्य द्वारा अपने भोजन/व्यवसाय के लिए उनका बर्बरतापूर्ण कत्ल करना नैतिक दृष्टि से भी अनुचित है। इसी तरह पेड़–पौधों से भी अनाज, फल, सब्जियां प्राप्त करना गलत नहीं है परंतु पेड़ों को काटना अनुचित है।

अतः शाकाहार अपनाएं- स्वस्थ रहें। साथ ही शाकाहार को प्रोत्साहन देकर आर्थिक, नैतिक, आध्यात्मिक एवं पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में अपना अमूल्य योगदान दें।

आप सभी का जीवन सदैव शाकाहार ही रहा है।

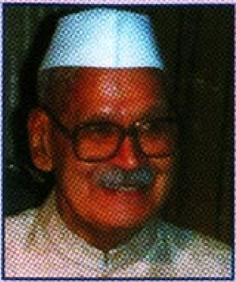

श्री शंकरदयाल शर्मा

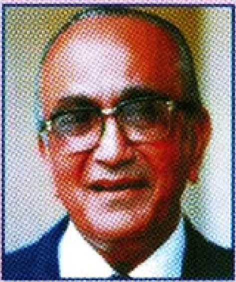

पी. एन. भगवती

पूर्व प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई

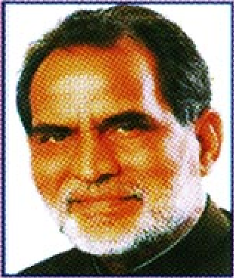

पूर्व प्रधानमंत्री चन्द्रशेखर

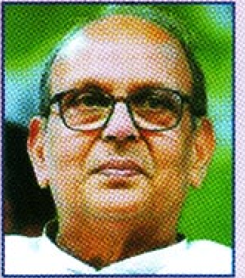

पूर्व प्रधानमंत्री बी.पी. सिंह

पूर्व प्रधानमंत्री नरसिम्हा राव

राष्ट्रपति डॉ.ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

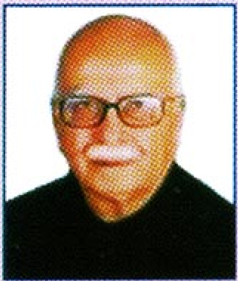

श्री लालकृष्ण आडवाणी

श्री मुरली मनोहर जोशी

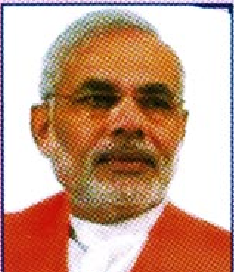

धानमंत्री श्री नरेन्द्रभाई मोदी

श्रीमती मेनका गांधी

बाबा आम्टे

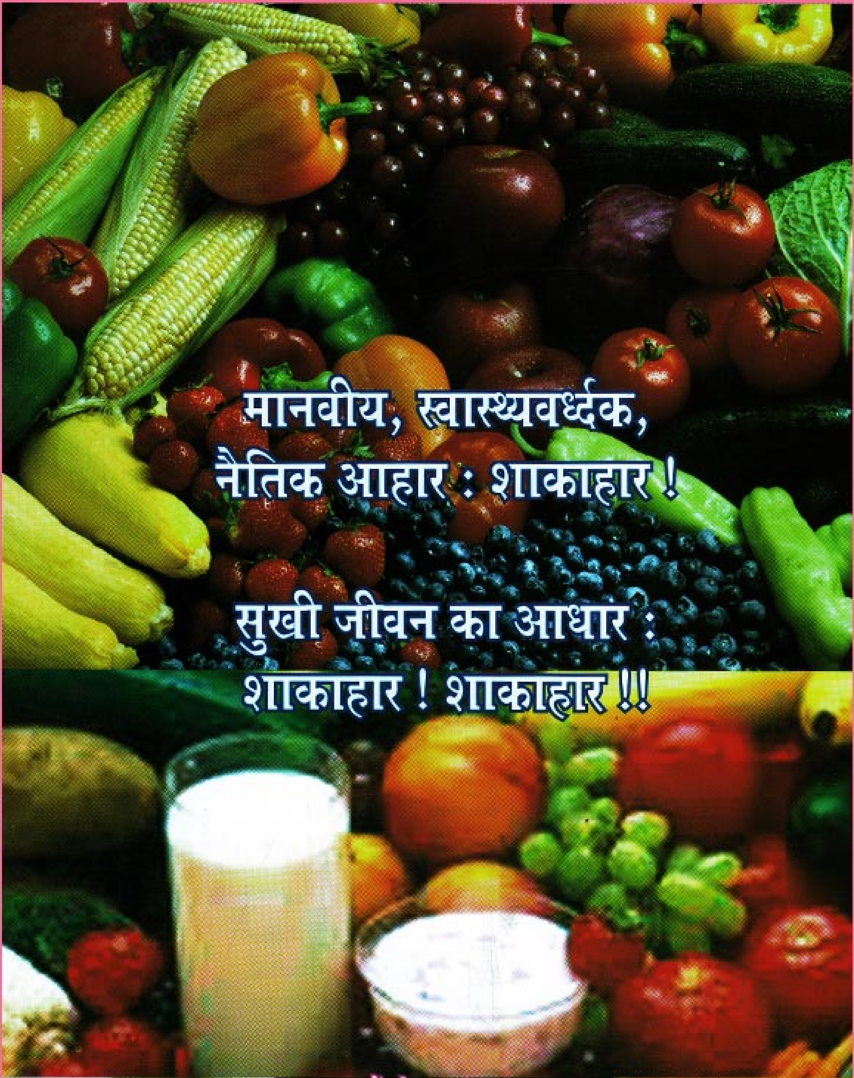

Printed at : Jain Prakashan Kendra, Sowcarpet, Chennai - 79. Cell : 93822 91400